Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

आहार विवेक
अति आहार थी विषें वर्धें, घणोंइज फाटें पेट।
धांन अमाउ उरतां, हांडी फाटें नेट।।

हे जीव! तू विचार कर देख, हे मूढ़! विषय में आसक्त मत बन। थोड़े सुखों के लिए बहुत सुखों को मत गवां।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 29 • 21 अप्रैल - 27 अप्रैल, 2025 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 19-04-2025 • पेज 16 ₹ 10 रुपये

आध्यात्मिक आभूषणों से सजाएं आत्मा को : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

दुर्लभ मनुष्य जीवन का सार निकालने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

Address Here

अध्यात्म विकास का एक पहलू - आत्मानुशासन : आचार्यश्री महाश्रमण

नौ दिवसीय प्रवास हेतु वाव पधारे ग्यारहवें अधिशास्ता

वाव।
14 अप्रैल, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 10 किमी का विहार कर नौ दिवसीय प्रवास हेतु वाव के तेरापंथ भवन में पधारे। आचार्यश्री के शुभागमन के साथ ही वाव में बने 'महाश्रमण द्वार' का भी लोकार्पण हुआ।

'वर्धमान समवसरण' में दिव्य पुरुष ने अमृत देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि व्यक्ति दुःख मुक्त रहना चाहता है। सुखी जीवन उसे इष्ट होता है। प्रश्न होता है कि व्यक्ति दुःखों से मुक्त कैसे रह सकता है? शास्त्र में बताया गया है कि जन्म, जरा, व्याधि और मृत्यु दुःख है। संसार में कितना दुःख है, जहां प्राणी संकलिष्ट रहते हैं। व्यक्ति सुख पाने के लिए प्रयास करता है। भौतिक सुखों में लिप्त होता है, जिससे परिणाम बाद में दुःख का आ सकता है।

एक पदार्थों से मिलने वाला सुख होता है, वह थोड़ी देर का आभास है। उसके रस, गंध, स्पर्श जो पदार्थ जन्य सुख है, वह अस्थायी हैं, सुख का आभास है। उसके परिणाम में दुःख आ सकता है। इस अल्पकालिक सुख में आसक्ति है तो बाद में दुःख पैदा हो सकता है जैसे किम्पाक फल का सेवन। दुःखों से छुटकारा पाना है तो अपने आप का संयम करो। जो आत्मा दांत होती है, वह इस लोक में भी सुखी होती है और परलोक में भी सुखी बन सकती है।

(शेष पेज 12 पर)

युगप्रधान
आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के 16वें महाप्रयाण दिवस पर सादर अभिवंदना

महाप्रज्ञ को समझ पाऊं, कहां से इतना ज्ञान लाऊं?
महाप्रज्ञ की स्तुति कर पाऊं, कहां से इतनी शक्ति लाऊं ?
आंख मूंद कर ध्यान लगाऊं, खुद महाप्रज्ञ से जुड़ पाऊं।
जुड़ जाने पर पाता शक्ति, जब महाप्रज्ञ को खुद में पाऊं।।

श्रद्धावनत : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

सत्य बोलने का साहस ना हो तो झूठ भी नहीं बोलें : आचार्यश्री महाश्रमण

माडका।
12 अप्रैल, 2025

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण लगभग 11 किमी का विहार कर दो दिवसीय प्रवास हेतु वाव क्षेत्र के माडका स्थित तेरापंथ भवन पधारे। युगदृष्टा ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में 84 लाख जीव योनियां बताई गई हैं। अनंत जीव इस संसार में हैं, उनमें से अनंत जीव सिद्ध गति को प्राप्त हो चुके हैं और अनंत जीव मोक्ष को प्राप्त करने वाले हो सकते हैं। जो जीव मोक्ष को प्राप्त कर चुके हैं, वे 84 लाख जीव योनियों से मुक्त हो चुके हैं।

जो संसारी जीव हैं, वे इन 84 लाख जीव योनियों में ही भ्रमण कर रहे हैं। मनुष्य योनि भी उन्हीं में एक है। जीव संसार में भ्रमण करते-करते मानव योनि को प्राप्त कर सकते हैं। मानव जीवन अत्यंत महत्वपूर्ण और दुर्लभ जन्म होता है। जो इस मानव जीवन को पाकर इसे व्यर्थ गंवा देता है, वह जीवन की अनंतकालिक यात्रा में बड़ी भूल कर सकता है। पापों में लिप्त होकर इस मानव जीवन को गंवा देना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। मानव जीवन प्राप्त करना कठिन और दुर्लभ है, जो हमारे लिए अभी सुलभ है। अतः हमें इस जीवन को सफल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

(शेष पेज 12 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 अप्रैल - 27 अप्रैल, 2025

आध्यात्मिक आभूषणों से सजाएं आत्मा को : आचार्यश्री महाश्रमण

माडका।
13 अप्रैल, 2025

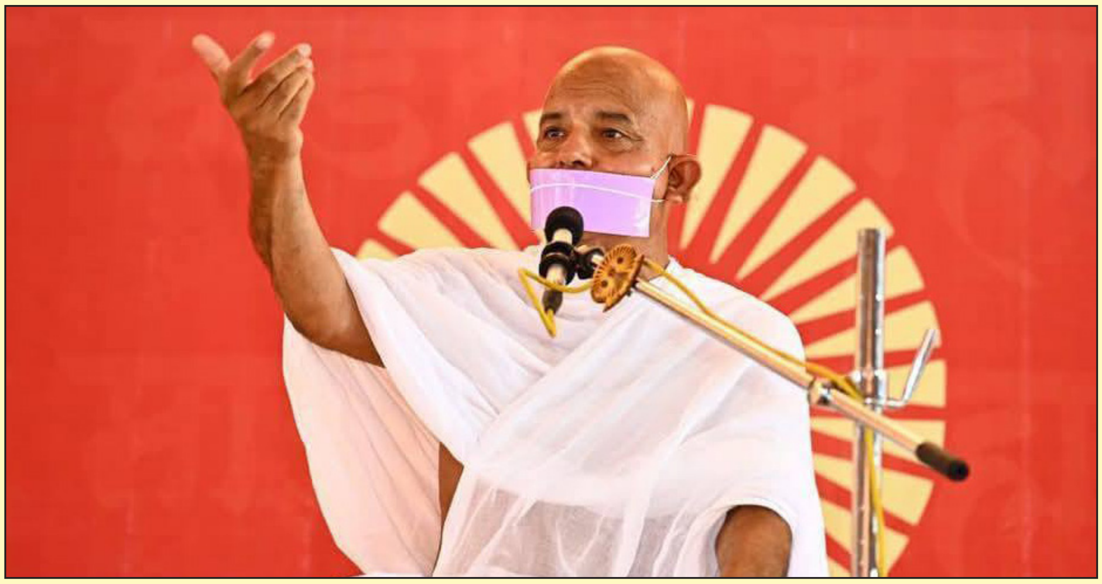

महान यायावर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने माडका प्रवास के दूसरे दिन पावन आगम वाणी का रसास्वादन कराते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि भगवान अथवा परमात्मा का स्मरण कितने लोग करते होंगे? जिनके मन में धर्म के प्रति रुचि, आस्था और आराध्य के प्रति भक्ति होती है, वे ही श्रद्धा से अपने आराध्य का स्मरण-जप करते हैं।

यह मानव जीवन और इसमें हमारा मन एक मनमंदिर बन जाए—जिसमें हमारा आराध्य विराजमान हो। उपासना, जप, भक्ति—ये सभी आत्म-शुद्धि के उत्तम साधन हैं। इनसे भाव-शुद्धि बनी रह सकती है। प्रतिक्रमण भी शुद्धिकरण का एक उपाय है। 'प्रभु मेरे अवगुण चित्त न धरो' जैसे गीतों में भी शुद्धि की भावना अंतर्निहित होती है। उपासना स्वयं में धर्म है। दूसरा धर्म है—व्यक्ति का सदाचारी आचरण।

आभूषणों से शरीर की शोभा हो सकती है, किंतु संतों का जीवन तो बिना बाह्य आभूषणों के भी शोभायमान हो सकता है। यह विचारणीय है कि एक उम्र के बाद गृहस्थ को परिग्रह का अल्पीकरण करना चाहिए। अब आंतरिक आभूषणों को उजागर करना चाहिए—और उन्हें धारण करना चाहिए।

आध्यात्मिक आभूषणों में हाथ का आभूषण है—शुद्ध साधु को दान देना। सिर का आभूषण है—गुरु के चरणों में वंदन करना। मुख का आभूषण है—सत्यवाणी बोलना; झूठ न बोलना। कान का आभूषण है—श्रुतज्ञान सुनना; दुःखी जन की बात सुनना और यथासंभव सहायता करना। हृदय का आभूषण है—छल-कपट रहित स्वच्छता रखना। भुजाओं का आभूषण है—धार्मिक और आध्यात्मिक सेवा में शक्ति का सदुपयोग करना।

संतों के चरणों से की गई लंबी यात्राएं भी आध्यात्मिक आभूषण हैं। उपासकजन भी धर्म-आध्यात्मिक सहयोग दे सकते हैं। शरीर के अंगों का उपयोग अधिक से अधिक लौकोत्तर दृष्टिकोण में करें। किसी को सम्यक दृष्टि प्रदान करें। मानव जीवन का उपयोग धार्मिक सेवा में करें। 'सुमंगल साधना' श्रावक के लिए उच्च कोटि की साधना है—उसे अपनाएं। व्यापार में भी अहिंसा और ईमानदारी रहे। किसी के साथ धोखाधड़ी न हो। प्रामाणिकता आत्मा को निर्मल बनाए रखती है।

भगवान महावीर ने अत्यंत उत्कृष्ट साधना की थी। आचार्य भिक्षु में भी त्याग, संयम, सहिष्णुता, साधना और ज्ञान का अद्वितीय वैभव था। भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष समीप है—इस निमित्त उपासक आचार्य भिक्षु के जीवन को पढ़ने और समझने का प्रयास करें।

साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशाजी ने कहा कि पारसमणि के संस्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है। गुरु भी पारसमणि के समान होते हैं। उनके सान्निध्य से शिष्य की आत्मा निर्मल बन जाती है। कर्मों से भारी आत्मा हल्की हो जाती है। लौकिक गुरु लौकिक ज्ञान देते हैं, जबकि लोकोत्तर गुरु आत्मा को जानने का दिव्य ज्ञान प्रदान करते हैं। हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं कि हमें ऐसे परम लोकोत्तर गुरु प्राप्त हुए हैं, जो हमें पाथेय प्रदान करते हैं।

पूज्यवर की अभिवंदना में अपनी जन्मभूमि की ओर से साध्वी सिद्धांतश्री जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यवर ने उन्हें स्वाध्याय, साधना, सेवा भावना व सिद्धांत के अध्ययन का मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। माडका तेरापंथ महिला मण्डल ने स्वागत गीत का संगान किया।

'संघ समर्पण गौरव गाथा' परिख परिवार-माडका की ओर से रमिला बेन और अल्का बेन प्रस्तुति दी। चेतना परिख ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। किरिटभाई ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

साधुत्व से बड़ी कोई डिग्री नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

वासरडा।
11 अप्रैल, 2025

मर्यादा पुरूषोत्तम आचार्यश्री महाश्रमणजी भाभर से विहार कर वासरडा पधारे। पूज्यवर ने अमृत देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि दुनिया में मनुष्य है, पशु एवं और भी छोटे-छोटे अनेक प्रकार के प्राणी हैं। इन सब में मनुष्य एक उत्तम कोटि का प्राणी प्रतीत हो रहा है क्योंकि साधना की उत्तम भूमिका पर मनुष्य ही आरूढ़ हो सकता है। मनुष्य के बाद गुणस्थानों की दृष्टि से दूसरा स्थान पशु का है। देवगति और नरक गति तो नंबर तीन पर आती है। मनुष्य में तो सारे के सारे गुणस्थान उपलब्ध हो सकते हैं। संज्ञी तिर्यन्च पंचेन्द्रिय पशु में पंचम गुणस्थान उपलब्ध हो सकता है। देव और नरक गति में तो चौथे गुणस्थान के आगे नहीं पाया जाता है।

मनुष्यों में साधु भी मिलते हैं। पूरी सृष्टि में कहीं न कहीं साधु अवश्य मिलते हैं। संत है तो संतुलन है, पाप है तो धर्म भी है। तीर्थंकर भी हमेशा रहते हैं। साधु का जीवन साधनामय हो। साधु-साधु में तारतम्य हो सकता है। साधु से भी भूल हो सकती है। छठे गुणस्थान के दोष से छठा गुणस्थान नहीं जाता। पुलाक नियंठा वाला भी साधु होता है। छठे गुणस्थान का दायरा लंबा चौड़ा है। प्रमाद का परिष्कार करने की व प्रायश्चित की भावना होनी चाहिए।

साधु के लिए दोषों की शुद्धि के लिए दो उपाय है - प्रायश्चित और प्रतिक्रमण। साधु इनके प्रति जागरूक रहे। साधु मेधावी और तपस्या करने वाला हो।

साधु तो तपोधनी, अकिंचन होते हैं। जिसने सब कुछ छोड़ दिया वह बड़ा मालिक होता है। हमारे धर्म संघ में अनेक बड़े-बड़े तपस्वी हुए हैं और वर्तमान में भी है। साधु के जीवन में साधना होती है। हमारे साधु-साध्वियां अनेक वैशिष्ट्य गुणों वाले हैं, अनेक डिग्रियां धारक साधु-साध्वियां हैं। उपाधि अपना प्रभाव छोड़ सकती है पर इन सबसे बड़ी उपाधि तो साधुता है।

चतुर्दशी के अवसर पर हाजरी का वाचन कराते हुए पूज्यवर ने कहा कि पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति ये तेरह हमारी मूल पूंजी है। हमारे धर्म संघ में पद का महत्व है, डिग्रियां गौण है। चारित्र का, साधना का अपना महत्व है। सबमें परस्पर सौहार्द भाव रहे। पूज्य प्रवर के निर्देशानुसार मुनि मोक्षकुमारजी एवं मुनि कैवल्य कुमारजी ने लेख पत्र का वाचन किया। उपस्थित साधु-साध्वियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का वाचन किया।

पूज्यवर के स्वागत में स्कूल के प्रिंसिपल प्रेमभाई चौधरी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। दो चतुर्मास करने के बाद गुरुदर्शन करने वाले मुनि यशवंतकुमारजी ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। मुनि मोक्षकुमारजी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। आचार्यश्री ने दोनों संतों को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

"अणुव्रत : आने वाले कल के विश्व का आधार" विषय पर परिसंवाद

गुजरात विश्व कोष ट्रस्ट, अहमदाबाद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विद्वानों ने रखे विचार

अहमदाबाद।

गुजरात विश्व कोष ट्रस्ट, अहमदाबाद द्वारा आयोजित परिसंवाद ₹अणुव्रतः आने वाले कल के विश्व का आधार₹ विषय पर आयोजित हुआ, जिसमें अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि डॉ. मदनकुमार जी और अणुव्रत आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मननकुमारजी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मुनि डॉ. मदन कुमार जी ने अपने वक्तव्य में अणुव्रत को शांति का संदेश बताते हुए इसे जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया। मुनि मनन कुमार जी ने अणुव्रत आचार संहिता की व्याख्या करते हुए इसे जीवन जीने की सच्ची कला बताया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अहमदाबाद महापौर प्रतिभा जैन ने अणुव्रत को मानव कल्याण का मार्ग बताते हुए कहा कि यह जीवन को सही दिशा देने वाली संहिता है। पद्मश्री साहित्यकार कुमारपाल भाई देसाई ने कहा कि अणुव्रत जीवन शैली को अपनाकर ही हिंसा और युद्ध ग्रस्त विश्व को शांति व सद्भाव की दिशा में अग्रसर किया जा सकता है। यह संयममय आदर्श समाज का मार्ग प्रशस्त करता है।

गुजरात सरकार के पूर्व मुख्य सचिव एवं सोमनाथ ट्रस्ट के ट्रस्टी पी.के. लहरी ने 'अणुव्रत आचार संहिता' और गांधी जी के प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

उन्होंने कहा - अणुव्रत, मानव को सच्चा मानव बनाने की जीवन पद्धति है। राजेंद्र सेठिया (एडिशनल कमिश्नर, उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, राजस्थान सरकार) ने अपने वक्तव्य में अणुव्रत के व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए कहा कि प्रशासनिक सेवा की चुनौतियों के बीच अणुव्रत ने मुझे सच्चे सुख की ओर अग्रसर किया।

अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय संयोजक जिनेन्द्र कुमार कोठारी ने मंच की स्थापना और उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 1996 में आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के मंगल आशीर्वाद से इस प्रकल्प की नींव रखी गई थी। इसका उद्देश्य नैतिक, मानवीय और चारित्रिक लेखन को बढ़ावा देना है, ताकि सकारात्मक और संस्कारित साहित्य के माध्यम से समाज को एक नई दिशा दी जा सके।

अणुव्रत समिति, अहमदाबाद के अध्यक्ष प्रकाश जैन ने अणुव्रत पर सारगर्भित उद्बोधन दिया। नरेंद्र जैन ने परिसंवाद की भूमिका स्पष्ट की। कार्यक्रम का कुशल संचालन अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय सह संयोजक संतोष सुराणा ने किया। कार्यक्रम में साहित्यकारों, शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

'मेक योर मार्क' कार्यशाला का हुआ आयोजन

कुंबलगुडु/विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के अंतर्गत लगातार 27 घंटे तक चलने वाली विशेष कार्यशाला मेक योर मार्क का आयोजन कुंबलगुडु स्थित आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केंद्र में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा किया गया। सामूहिक नवकार मंत्र के मंत्रोच्चार से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तेयुप टीम ने विजय गीत का संगान किया। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सभी का स्वागत करते हुए शुभकामनाएं प्रेषित की।

दिशा चोपड़ा ने प्रशिक्षक अरविंद मांडोत और रौनक गांधी ने प्रशिक्षिका बबीता रायसोनी का परिचय दिया। मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने प्रतिभागियों को आत्मविश्वास बढ़ाने हेतु सतत अभ्यास, समय प्रबंधन, निर्णय लेने की क्षमता का विकास करने, टीमवर्क, मोटिवेशन जैसे अनेक बिंदुओं पर विस्तार से समझाते हुए दैनिक उपयोगी सूत्र सिखाए। प्रातः काल सभी प्रतिभागियों को ट्रेकिंग के लिए मंचनबेले बैकवॉटर्स ले जाया गया, जहाँ प्रकृति की गोद में विशेष सत्र का आयोजन किया गया। दो दिन चले सत्र में अभातेयुप के राष्ट्रीय मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत और सीपीएस राष्ट्रीय प्रशिक्षिका बबीता रायसोनी ने विभिन्न प्रकार से मनोवैज्ञानिक गतिविधि, प्रश्नपत्र, परिचर्चा, रचनात्मक चुनौतियां के माध्यम से सभी प्रतिभागियों को अपने जीवन के विशेष लक्ष्यों को निर्धारित करने एवं नियोजित करने का मार्गदर्शन किया। व्याहारिक रूप से सबने अपने लक्ष्य को चार्ट पर अंकित कर उन्हें एक निश्चित समय तक पूर्ण करने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की।

शनिवारीय सामायिक अभ्यास में सामायिक की वैज्ञानिकता के बारे में परिचर्चा की गई। कार्यशाला में 35 प्रतिभागियों की सहभागिता रही। कार्यशाला संयोजक विनीत गांधी का सराहनीय श्रम रहा। तेयुप प्रबंध मंडल, पूर्व अध्यक्ष कार्यकारिणी सदस्य आदि की उपस्थिति रही। परिषद् द्वारा प्रशिक्षकों का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री संजय भटेवरा ने किया।

जल संरक्षण कार्यशाला का आयोजन

टिटिलागढ़।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार, स्थानीय तेरापंथ भवन में जल संरक्षण विषय पर एक प्रेरणादायक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला की शुरुआत स्नेहा जैन द्वारा मंगलाचरण के साथ हुई। महिला मंडल की अध्यक्षा बबीता जैन ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए श्रावक रूपचंद सेठिया को स्मरण किया। उन्होंने बताया कि सेठियाजी अपने जीवन में जल के न्यूनतम उपयोग की प्रेरणादायक मिसाल थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि, असिस्टेंट कलेक्टर संदीप चंद्राकर ने अपने संबोधन में जल संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने दैनिक जीवन में जल बचत के सरल एवं प्रभावी उपायों को साझा करते हुए कहा कि 'छोटे-छोटे प्रयास बड़े परिवर्तन ला सकते हैं।' उन्होंने सुझाव दिया कि जल संरक्षण को जन-जन तक पहुँचाने के लिए स्लोगन वाले स्टिकर्स घरों में चिपकाए जा सकते हैं। इसके माध्यम से समाज में जल के विवेकपूर्ण उपयोग को लेकर जागरूकता फैलाई जा सकती है।अध्यक्ष बबीता जैन ने असिस्टेंट कलेक्टर का सम्मान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री दीपिका जैन ने किया।

एक अनुत्तर संयमी साधक : संघर्षों में खिलता फूल

हैदराबाद।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का अभिनिष्क्रमण दिवस तीन चरणों में मनाया गया। प्रथम चरण क्लासिक गार्डन में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ, द्वितीय चरण जैन उपाश्रय पार्श्वनाथ मंदिर में तथा तृतीय चरण सुराणा भवन में आयोजित किया गया। डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी ने कहा – आचार्य भिक्षु मरुधर की शुष्क धरा पर जन्मे, यदि वे जर्मनी में जन्म लेते तो कांत से भी बड़े दार्शनिक होते। उन्होंने कभी विद्यालय का दरवाजा नहीं देखा, पर विद्या ने उनके चरण चूमे। उन्होंने कभी कविता का पाठ नहीं किया, फिर भी कल्पना की ऊँची उड़ान भरते रहे।

साध्वीश्री ने कहा कि आज के दिन आचार्य भिक्षु ने एक नई क्रांति की, जो आचार-विचार से संबंधित थी। उन्होंने सत्य के लिए घर छोड़ा, गुरु को छोड़ा, सत्य की पगडंडी पर चले और अंततः सत्य में ही विलीन हो गए।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा – आचार्य भिक्षु का अभिनिष्क्रमण अनेक संघर्षों, झंझावातों और तूफानों से भरा रहा। वे जब अपने गुरु से अलग हुए, तो मानो अपने सिर पर विपत्ति मोल ले ली। किन्तु उनका संयम अद्वितीय था। उनका एक ही लक्ष्य था – 'मर पूरा देस्यां, आत्मा रा कारज सारस्यां।' साध्वी मेरुप्रभाजी ने आचार्य भिक्षु के जन्म से लेकर अभिनिष्क्रमण की कथा को गीत के रूप में प्रस्तुत किया। साध्वी दक्षप्रभाजी ने अपने भावों की भावांजलि गीत के माध्यम से अर्पित की। सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा, महिला मंडल अध्यक्षा कविता अच्छा, मंत्री सुशीला मोदी तथा महासभा सदस्य लक्ष्मीपत बैद ने अपने विचार प्रस्तुत किए। धन्यवाद ज्ञापन सभा मंत्री हेमंत संचेती ने किया। मंच संचालन सभा के सह-मंत्री राकेश सुराणा ने किया।

जैन वाङ्मय वास्तु दर्शन कार्यशाला का आयोजन

ऐरोली, नवी मुंबई।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि कुलदीप कुमार जी के सान्निध्य में 'जैन वास्तु में आरोग्य' कार्यशाला की समायोजना हुई।

मुनि श्री ने कहा- स्वास्थ्य के सूत्रों को जानकर उन्हें जीवन में उतार कर अक्षय सुख को प्राप्त करें। मुनि मुकुल कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा- जैन वास्तु में इमोशनल कारणों की समग्रता से विवेचना की गई है। जितनी भी समस्या है वो मानसिक विकृति से उत्पन्न होती है। काम से वात रोग, लोभ से कफ रोग एवं क्रोध से पित्त रोग की उत्पत्ति होती है।

मंत्र चिकित्सा, रंग चिकित्सा एवं हस्ताक्षर चिकित्सा से शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक आरोग्य को प्राप्त कर स्वस्थ दीर्घायुष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

इससे पूर्व कार्यक्रम का मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने किया। तेरापंथ सभा ऐरोली के अध्यक्ष सुरेश मोटावत ने स्वागत वक्तव्य दिया। तेयुप कांदिवली के अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त किये।

आभार ज्ञापन तेयुप ऐरोली के अध्यक्ष मुकेश बेताला ने किया, कार्यक्रम का कुशल संचालन कर्मठ कार्यकर्ता धीरज बोहरा ने किया। इस कार्यक्रम में अनेक क्षेत्रों से श्रावक समाज की विशाल जनसंख्या में उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
21 अप्रैल - 27 अप्रैल, 2025

संक्षिप्त खबर

नव वर्ष के उपलक्ष्य में वृहद् मंगलपाठ का आयोजन

कांकरोली। साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में विक्रम संवत् 2082 के नववर्ष पर वृहद् मंगल पाठ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वीश्री द्वारा भक्तामर स्तोत्र, उपसर्गहर स्तोत्र, विविध मंत्रों एवं गीतों के साथ-साथ नमस्कार महामंत्र का रंग और केन्द्रों सहित जप का प्रयोग कराते हुए श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक अनुभूति से भर दिया गया। अपने संबोधन में साध्वीश्री ने कहा- यदि हम नववर्ष को सचमुच मंगलमय बनाना चाहते है तो इसके लिए शुभ संकल्पों की आवश्यकता है। तीर्थंकरों और आचार्यों द्वारा प्रदत्त सूत्र हमारे जीवन का मार्गदर्शन कर सकते हैं। चार वस्तुएँ हैं जो कभी वापस नहीं आतीं – कमान से निकला तीर, बीता हुआ समय, खोया हुआ अवसर, और मुँह से निकला शब्द। अतः समय को पहचानो, अवसर को साधो और इस नववर्ष को शुभ संकल्पों के साथ सार्थक बनाओ। साध्वी गीतार्थप्रभा जी ने नववर्ष के स्वागत में कविता पाठ किया।

दिव्यांगों के बीच कार्यक्रम

हैदराबाद। महावीर विकलांग केन्द्र किंग कोठी में महावीर जयन्ती के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में दिव्यांगों को कृत्रिम पैर दिये गये। निर्मला बैद द्वारा नशामुक्ति की प्रेरणा दी गयी। कार्यक्रम में प्रमुख समाजसेवी अमृत आंचलिया, डिम्पल बैद, हेमा बांठिया, लक्ष्मी लुणिया उपस्थित थे। कृत्रिम पैर हेतु अमृत आंचलिया, निर्मला, सुशीला, सरोज बैद का सहयोग रहा।

भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस और महावीर जयंती का आयोजन

इचलकरंजी। ज्ञानशाला में महावीर जयंती और भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस मनाया गया। ज्ञानार्थियों ने भगवान महावीर के बारे में भाषण, कहानी, कविता और महावीर अष्टकम के माध्यम से अपनी रोचक प्रस्तुति दी। प्रशिक्षिकाओं ने भगवान महावीर के गौरवमय इतिहास एवं तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु के अभिनिष्क्रमण से तेरापंथ की स्थापना तक के इतिहास की जानकारी दी। ज्ञान मित्र द्वारा निर्देशित भगवान महावीर संबंधी चित्रकला गतिविधि भी बच्चों को करवाई गयी। कार्यक्रम में 9 प्रशिक्षक और 30 ज्ञानार्थियों की उपस्थिति रही।

संथारा समाचार

लूणकरणसर। लूणकरनसर निवासी रिद्धु देवी दुगड़ धर्मपत्नी स्व. चौथमल दुगड़ को पूज्य गुरुदेव युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की स्वीकृति से 'शासनश्री' साध्वी बसन्तप्रभा जी ने पूर्ण चेतन अवस्था में पारिवारिक जनों की सहमति से तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। इन्होंने पांच दिनों की तपस्या के बाद संथारा स्वीकार किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, महिला मंडल एवं युवक परिषद के पदाधिकारीगण तथा समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। रिद्धु देवी दुगड़ अपने जीवन के शताब्दी वर्ष में जीवन यापन कर रही थीं। परिजनों के अनुसार वे अपने जीवन में बराबर तपस्या भी करती व हमेशा यही कहती कि मुझे अंतिम समय में संथारा पचखा देना। साध्वी बसंतप्रभा जी आदि साध्वी वृंद ने संथारा साधिका के भावों को प्रवर्धमान बनाए रखा। 6 दिनों के तिविहार संथारे एवं 1 घंटे के चौविहार संथारे के साथ 22 मार्च 2025 को प्रातः 11:31 बजे आपका मनोरथ सिद्ध हुआ।

❖ जहां तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें।

हैप्पी फेमिली - हेल्दी फेमिली

परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ भव्य आयोजन

जोधपुर।

'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी एवं साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में अमर नगर तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा के तत्वावधान में परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी ने अपने उद्बोधन में कहा, "परिवार एक ऐसे उपवन का नाम है, जिसमें कमल के फूल भी हैं, गुलाब और चमेली के फूल भी हैं तो मोगरा और गेंदे के फूल भी हैं। ये सारे फूल मिलकर परिवार रूपी उपवन की शोभा बढ़ाते हैं, परिवार रूपी आंगन में प्रेम का झरना निरन्तर बहता रहे ताकि परिवार रूपी धरती हरी भरी रहे।"

साध्वी अणिमाश्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा - हैप्पी फेमिली - हेल्दी फेमिली हर व्यक्ति की आँखों का प्यारा सा सपना होता है। हर व्यक्ति अपने परिवार रूपी धरती पर खुशहाली की फसल को लहराता देखना चाहता है किन्तु चाहने मात्र से खुशहाली नहीं आ सकती।

खुशहाली की फसल तैयार करने के लिए वैसे ही बीज अंकुरित करने होंगें। वो बीज बाजार से खरीदे नहीं जा सकते। वो बीज आपके भीतर विद्यमान हैं।

परिवारिक खुशहाली का सबसे महत्वपूर्ण बीज है- सहनशीलता। एक दूसरे को सहना सीखें। परिवारिक सदस्यों में प्रमोद भावना होनी चाहिए। गुणों का सम्मान खुशहाली को अभिवर्जित करता है। पारिवारिक सदस्यों में एक दूसरे के प्रति सहानुभुति एवं विश्वास होना चाहिए। विश्वास वो बरगद का पेड़ है जिसकी शीतल छाया में हर व्यक्ति चैन की बंसी बजाता है। सप्ताह में सात वार होते हैं। किन्तु परिवार रूपी आठवें वार में आनंद एवं खुशहाली है तो सप्ताह के सातों वार आनन्दमय, शान्तिमय बन जाएगें।

साध्वी कर्णिकाश्री जी एवं साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वी पुण्यदर्शना जी, साध्वी समत्वयशा जी, साध्वी मैत्रीप्रभा जी, साध्वी रोशनीप्रभा जी ने सुंदर एवं भावपूर्ण गीत का संगान किया। सभाध्यक्ष सुरेश जीरावला ने स्वागत भाषण की अभिव्यक्ति दी। टीपीएफ अध्यक्ष निखिल जैन ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

विश्व नवकार महामंत्र दिवस का आयोजन

हासन।

डॉ. मुनि पुलकितकुमार जी के सान्निध्य में सकल हासन जैन समाज द्वारा विश्व नवकार महामंत्र दिवस के उपलक्ष्य में नवकार महामंत्र जप अनुष्ठान कार्यक्रम आयोजित हुआ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी ने नवकार महामंत्र का 27 मिनट जाप करवाया। महामंत्र की महिमा बताते हुए उन्होंने कहा नवकार महामंत्र मंगलकारी है। वर्तमान समय में होने वाले रिसर्च बता रहें हैं कि इस महामंत्र जाप से अनेक प्रकार की शारीरिक व मानसिक बीमारियां ठीक होती हैं। इससे प्रसन्नता के हारमोंस का निर्माण होता है।

'नचिकेता' मुनि आदित्यकुमार जी ने महामंत्र आधारित गीत के साथ जाप करवाया।

तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत तथा तेरापंथ सभा अध्यक्ष सोहनलाल तातेड, जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक संघ के देवराज पालरेचा, स्थानकवासी समाज हासन के अध्यक्ष बसंत बोहरा ने विचार रखें। कार्यक्रम का संचालन ममता कोठारी ने किया। तेरापंथ सभा भवन में सकल जैन समाज के 207 व्यक्तियों ने रजिस्ट्रेशन करवाया। आभार ज्ञापन मंत्री विमल कोठारी ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ युवक परिषद एवं महिला मंडल की कार्यकर्ताओं का विशेष श्रम रहा।

करियर काउंसलिंग पैनल डिस्कशन का हुआ आयोजन

पुणे।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, पुणे और मानव मिलन यूथ ग्रुप के संयुक्त तत्वावधान में तेरापंथ भवन में करियर काउंसलिंग पैनल डिस्कशन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विशेषज्ञ वक्ताओं ने छात्रों और अभिभावकों को करियर चयन से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की अध्यक्षा मयूरी सुराणा ने सभी का स्वागत करते हुए TPF के गतिविधियों के बारे में बताया और करियर काउंसलिंग के महत्व को स्पष्ट किया। मानव मिलन यूथ ग्रुप की अध्यक्षा परेशा दुधेडिया ने भी अपने ग्रुप और कार्य की जानकारी देकर सभी का स्वागत किया। पैनल में मुख्य वक्ता के रूप में बाल एवं छात्र परामर्शदाता डॉ. राजेश्वर चन्ने, 'किसको पूछूं' के संस्थापक श्रेणिक कुचेरिया, स्टार्टअप, नवाचार एवं इनक्यूबेशन के प्रमुख प्रो. गुरुराज डांगे ने भाग लिया। पॉडकास्ट चैनल भारत गुरुज की संस्थापक पूनम मंडलेचा ने कार्यक्रम में संचालक की भूमिका का निर्वहन किया। करियर, पेरेंटिंग, स्कील डेवेलपमेंट, हैप्पीनेस इन करियर, क्रॉस डोमेन, सरकारी सुविधाएं आदि विभिन्न विषयों पर पैनल डिस्कशन के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षाविदों ने हिस्सा लिया।

वर्षीतप अनुमोदना कार्यक्रम का आयोजन

रेलमगरा (राजसमन्द)।

स्थानीय तेरापंथ भवन के प्रांगण में समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी के सान्निध्य में आठ तपस्वियों के वर्षीतप अनुमोदना समारोह का आयोजन श्रद्धा व समर्पण के वातावरण में सम्पन्न हुआ। समारोह की शुरुआत मंगलाचरण से हुई, जिसे सोनी परिवार की महिला सदस्यों ने प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर गणपतलाल गंभीरमल सोनी एवं पुष्पा सोनी, धर्मचन्द नवलराम बडाला एवं लक्ष्मीदेवी बडाला, सुनीता राकेश बाफना, लक्षिता मनोहरलाल लोढ़ा, मंजूदेवी कमल लोढ़ा तथा कैलाशदेवी मदनलाल सोनी ने वर्षीतप पूर्ण किया। तपस्वियों के सम्मान में पारिवारिकजन एवं समाजजन ने गीत, वक्तव्य एवं मंगल भावनाएं प्रस्तुत कीं।

समणी मननप्रज्ञाजी ने तप के वैशिष्ट्य पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा समणी मृदुप्रज्ञाजी के साथ अक्षय तृतीया से संबंधित गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। समणी मधुरप्रज्ञाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि रेलमगरा का नाम तेरापंथ के इतिहास से सदैव जुड़ा रहेगा। तेरापंथ सभा अध्यक्ष मुकेश मेहता ने स्वागत भाषण दिया।

मंत्री रमेश ढालावत, नरेंद्र लोढ़ा, गंभीरमल सोनी, रोशनलाल टुकलिया, तेयुप अध्यक्ष अनिल टुकलिया सहित अन्य वक्ताओं ने तप की महत्ता पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सीमा सोनी ने किया। महिला मंडल की बहनों द्वारा अनुमोदना गीत की प्रस्तुति दी। अंत में अरविंद सोनी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

संक्षिप्त खबर

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर-श्रीरामपुरम के अंतर्गत 266वें भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस एवं विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष में दो दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का समायोजन किया गया। प्रथम दिवस मरियपनपाल्या स्थित गायत्री पार्क एवं द्वितीय दिवस सुब्रमण्यनगर स्थित संगोली रायण्णा पार्क में ग्लूकोमीटर के माध्यम से ब्लड शुगर एवं रक्त चाप जांच की गई। कैम्प की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। कुल 116 सदस्यों ने इस शिविर का लाभ लिया। इस अवसर पर तेयुप से जयंतीलाल गांधी, मिलन गांधी, राजेश देरासरिया, मुकेश नाहर एवं मुकेश भंडारी ने अपनी सेवाए प्रदान की।

ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन

रतलाम। अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, रतलाम एवं श्री जैन श्वेताम्बर सोशयल ग्रुप, सैलाना के संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन रतलाम से लगभग 20 किलोमीटर दूर मानव सेवा समिति ब्लड बैंक के सहयोग से महावीर जन्म कल्याणक दिवस पर आयोजित किया गया। कैंप में 56 यूनिट ब्लड संग्रहित किया गया। इस अवसर पर अभातेयुप समिति सदस्य व उपाध्यक्ष पियुष दख, मंत्री अभिनव बरमेचा एवं जैन सोशल ग्रुप सैलाना से पंकज चन्डालिया, शैलेन्द्र चन्डालिया, मानव सेवा समिति से गोविंद काकानी, डा. इन्दरमल जैन आदि की उपस्थिति रही।

आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन

इरोड। स्थानीय तेरापंथ भवन में नवान्हिक आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन किया गया। उपासक हनुमानमल दुग्गड एवं उपासक प्रकाश पारख द्वारा अनुष्ठान कराया गया। प्रतिदिन सामायिक के ध्यान, जप और तीर्थंकरो की स्तुति के साथ मेघ कुमार के जीवन प्रसंगों का वर्णन किया गया। भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर आचार्य भिक्षु के प्रेरणा दायी प्रसंगों का विवेचन किया गया। श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति में अनुष्ठान हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न कराया गया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

पड़िहारा। मनोज-उषा सुराणा की सुपुत्री सुरभि सुराणा एवं छापर निवासी जयकुमार- शालिनी भंसाली की सुपुत्री समीक्षा भंसाली के नूतन कोचिंग सेंटर ASCEND ACADEMY का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से रेहाबारी में हुआ। संस्कारक राकेश जैन एवं आनंद सुराणा ने विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से शुभारंभ सानन्द संपादित करवाया।

शिलान्यास समारोह

भीलवाड़ा। निर्मला देवी ओस्तवाल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा निर्माणाधीन सामुदायिक भवन का शिलान्यास संस्कारक अशोक सिंघवी व नवीन वागरेचा व सहयोगी संस्कारक अशोक बापना ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से जैन संस्कार विधि से सानन्द संपादित करवाया।

'एक बूंद एक सागर' जल संरक्षण कार्यशाला का आयोजन

मदुरै। स्थानीय तेरापंथ भवन में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार जल संरक्षण कार्यशाला का प्रारंभ मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से किया गया। अध्यक्ष लता कोठारी ने सभी का स्वागत किया व नारी लोक का वाचन किया। कार्यशाला की मुख्य वक्ता चंदादेवी कोठारी ने बताया कि जीवन में सभी जीवों के लिए पानी आवश्यक है। बूंद से तालाब, तालाब से नदी, नदी से सागर बनता है। आवश्यक है कि हम सब संयम के साथ जल का उपयोग जागरुकता से करेंगे तो हम भविष्य में होने वाली जल की समस्याओं को कुछ हद तक कम कर सकते है। जल संरक्षण पर छोटे-छोटे टिप्स के माध्यम से बहुत ही उपयोगी तथ्यों के साथ उन्होंने समझाया कि हम अपने दैनिक जीवन में जल संरक्षण की शुरुआत सबसे पहले अपने घर से करें। जल संरक्षण कार्यशाला से पहले गीतिका का संगान किया। मधु देवी पारख ने भगवान महावीर की जीवनी पर प्रश्नोत्तर पूछे। धन्यवाद ज्ञापन रेखा दुगड़ एवं संचालन लता कोठारी ने किया।

'राइज एंड साइज' कार्यक्रम का आयोजन

हैदराबाद।

महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में, तेरापंथ सभा सिकंदराबाद द्वारा संचालित हैदराबाद की समस्त 21 ज्ञानशालाओं का संयुक्त मंचीय कार्यक्रम "राइज एंड साइज" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 100 प्रशिक्षिकाओं ने सक्रिय सहभागिता की।

कार्यक्रम के पहले चरण में कार्य वर्ष 2024 के दौरान उत्कृष्ट योगदान देने वाली प्रशिक्षिकाओं को सम्मानित किया गया। परामर्शक अंजू बैद ने प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि कार्यक्रम की मुख्य विशेषता भारत के विभिन्न राज्यों की थीम पर आधारित भव्य सांस्कृतिक प्रस्तुति रही। इसमें हिमायत नगर, कबाड़ीगुडा, काचीगुड़ा, बेगम बाजार, मलकपेट, तारनाका, नरेडमेट, कारखाना, बोवनपल्ली, अमीरपेट, डीवी कॉलोनी और सुचित्रा की प्रशिक्षिकाओं ने राजस्थानी, गोवा, हरियाणवी, उर्दू, बिहारी, बंगाली, तेलंगाना, आंध्र, केरल आदि राज्यों की पारंपरिक वेशभूषा और भाषाओं में मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में विभिन्न श्रेणियों के स्टार अवाड्र्स प्रदान किए गए। इनमें राइजिंग स्टार्स, शाइनिंग स्टार्स, सपोर्टिंग स्टार्स, मीडिया स्टार्स एवं स्टार टीचर 2024 के सम्मान शामिल रहे। इन पुरस्कारों को आंचलिक संयोजक सीमा दस्साणी, सह-संयोजक सरोज लोढ़ा, क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा, मुख्य प्रशिक्षक पुष्पा बर्डिया, परामर्शक अंजू बैद, तथा क्षेत्रीय सह-संयोजक यशोदा कोठारी, अरुणा भंडारी, सुरभि सिंघी, उषा सुराणा एवं परीक्षा व्यवस्थापक सरिता नखत द्वारा स्टार बैज पहनाकर प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के तीसरे चरण में तेरापंथ सभा सिकंदराबाद एवं ज्ञानशाला हैदराबाद द्वारा उन परिवारों को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया, जिन्होंने पिछले पाँच या उससे अधिक वर्षों से ज्ञानशालाओं के संचालन हेतु अपने घर या कार्यालय की जगह उपलब्ध करवाई है। शिवरामपल्ली - लक्ष्मीपत कुंडलिया परिवार, आईडीपीएल - कमल सुमित दुगड़ परिवार, तारनाका - बाबूलाल डक परिवार, शमशीरगंज - रमेशचंद समता सुराणा परिवार, अमीरपेट - भंवरलाल कंचनदेवी कोठारी परिवार, बोवनपल्ली - संदीप नीतू नाहटा परिवार, अत्तापुर - करणी ओरम अपार्टमेंट परिवार, बंजारा हिल्स - राजेंद्र पुष्पा कीमती परिवार, सुचित्रा - सुरेश सुमति धोका परिवार, बेगम बाजार - संजय जैन परिवार, कबाड़ीगुड़ा - बाबूलाल संपत बेंगानी परिवार का सम्मान किया गया।

इसके अतिरिक्त, हैदराबाद में संचालित ऑनलाइन ज्ञानशालाओं में सेवाएं दे रहीं प्रशिक्षिकाओं को भी सभा द्वारा सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया एवं आंचलिक संयोजक सीमा दस्साणी ने भावपूर्ण उद्बोधन दिया। सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने ज्ञानशाला के निरंतर विकास की मंगलकामना करते हुए सभा की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।कार्यक्रम का कुशल संचालन परीक्षा व्यवस्थापक एवं संयोजक सरिता नखत और उषा सुराणा ने किया। विभिन्न चरणों में अरुणा भंडारी, यशोदा कोठारी एवं सुरभि सिंघी ने सक्रिय योगदान दिया। अंत में, सुरभि सिंघी और अंकिता दूधोड़िया द्वारा भारत के विभिन्न राज्यों की थीम पर आधारित एक हेल्दी गेम आयोजित किया गया, जिसे उपस्थितजनों ने खूब सराहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 अप्रैल - 27 अप्रैल, 2025

2624वें भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर श्रद्धासिक्त कार्यक्रम

कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली

तेरापंथ सभा दक्षिण दिल्ली के तत्वावधान में साध्वी कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य में 2624वीं महावीर जन्म जयंती के पावन अवसर पर ₹वर्तमान युग में महावीर सिद्धांतों की प्रासंगिकता₹ विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा— भगवान महावीर एक अलौकिक महापुरुष थे, जिन्होंने जन्म से पहले ही सत्यमार्ग को पहचान लिया था तथा संयम को अपनी जीवन यात्रा का मूल आधार बनाया। उन्होंने कहा कि अहिंसा की गोद में ही त्राण, शरण और गति की प्रतिष्ठा संभव है। तभी तो मैत्री, करुणा, और दया जैसे मूल्य स्थिर होते हैं, और जीवों को अभयदान प्राप्त होता है। महावीर की बुलंद आवाज़ ने यह उद्घोषणा की थी कि सम्यक ज्ञान और सम्यक दर्शन के बिना मुक्ति संभव नहीं। जीव और जगत की व्याख्या में उन्होंने अनेकांत को माध्यम बनाया ताकि संभावनाओं को जीवित रखा जा सके। साध्वीश्री ने कहा— महावीर केवल एक व्यक्ति नहीं थे, बल्कि एक उन्नत, प्रकाशमान विचार थे, जिन्होंने अपनी वैचारिक क्रांति के ज़रिए युग की समस्याओं को समाहित किया। वर्तमान की जितनी भी ज्वलंत समस्याएँ हैं, महावीर के विचार न केवल उनसे मुक्ति दिलाते हैं, बल्कि एक अच्छा और प्रसन्न जीवन जीने का सूत्र भी प्रदान करते हैं। साध्वी सौभाग्ययशाजी ने कहा कि भगवान महावीर का संयम अनुपम था। उन्होंने साधना काल में वाणी का प्रयोग मानो किया ही नहीं। उनकी साधना उपशम रस से परिपूर्ण, श्रम चेतना का जीवंत रूप और समता का प्रारूप थी। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी सौभाग्ययशा जी ने किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आरएसएस प्रचारक महावीर कुमार ने अपने विचारों के माध्यम से महावीर सिद्धांतों की आवश्यकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। अणुव्रती संजय जैन (बिहारी), राजेश भंसाली, नॉर्थ ज़ोन जे.पी.एफ. के अध्यक्ष राजेश गेलड़ा, हीरालाल गेलड़ा, तेरापंथ सभा दिल्ली के उपाध्यक्ष गिरीश जैन, सभा दक्षिण दिल्ली के अध्यक्ष सुशील पटावरी आदि अनेकों लोगों ने गोष्ठी में भाग लिया। गोविंद बाफणा ने कविता और गीतिका के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए सायर बैंगाणी ने कहा— समाचार पत्र का पहला पृष्ठ पढ़ते ही महावीर सिद्धांतों की प्रासंगिकता दृष्टिगोचर होती है। साध्वी कल्याणयशाजी ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि इस युग के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर का जन्म एक आशा का जन्म है, जो निराशा के कुहासे को मिटाता है। महावीर के सिद्धांत एक प्रकाश स्तंभ की भांति हर इंसान का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

हासन

कर्नाटक सरकार सांस्कृतिक विभाग एवं सकल जैन समाज हासन के तत्वावधान में हासन जिला कलेक्टर सत्यभामा के निर्देशन में भगवान महावीर जयंती का कार्यक्रम हसनम्बा कला क्षेत्र भवन हासन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी ठाणा 2 के सान्निध्य में आयोजित हुआ। इस अवसर पर डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा भगवान महावीर के सिद्धांत आज भी उपयोगी हैं। उन्होंने अहिंसा व शांति का संदेश दिया। महापुरुष वही होता है जो समाज की बुराइयों को मिटाने का प्रयास करते हुए युग को नया मार्गदर्शन देता है। वर्तमान जागतिक समस्याओं का समाधान महावीर के अहिंसा और संयम के सूत्र में है। 'नचिकेता' मुनि आदित्यकुमार जी ने 'वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है' गीत के माध्यम से श्रावक समाज को प्रेरणा दी। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में सेंट्रल कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स के प्रिंसिपल चंद्रकांत पदेसुर ने महावीर सिद्धांतों का विस्तार से विवेचन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हासन नगर सभा अध्यक्ष चंद्र गौड़ा ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में तहसीलदार मोहन कुमार एवं कर्नाटक सरकार कर्मचारी संघ के अध्यक्ष कृष्ण गौडा थे। मुख्य अतिथि के रूप में डिप्टी पुलिस अधीक्षक मुरलीधर, कलालादेवी महिला समाज की अध्यक्ष सुप्रभा, दिगंबर जैन समाज अध्यक्ष एच. बी. शांति, महावीर भवन के अध्यक्ष एम. धनपाल, जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा अध्यक्ष सोहनलाल जैन, मूर्तिपूजक जैन संघ के अमृतलाल जैन, स्थानकसी जैन संघ के अध्यक्ष वसंतराज जैन थे।

गुंजन जितेंद्र गांधी तथा तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भगवान महावीर जन्म कल्याणक की मनमोहक नाटिका प्रस्तुत की। डॉ. एच. पी. तारानाथ ने आभार ज्ञापन तथा कार्यक्रम का संचालन यतिश कुमार ने किया। प्रवचन कार्यक्रम से पूर्व नगर में महावीर जयंती रैली का आयोजन सकल जैन समाज द्वारा किया गया जिसमें अच्छी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित था।

सुजानगढ़

तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी के सानिध्य में महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। महावीर अष्टकम से साध्वी पल्लवप्रभा जी ने मंगलाचरण किया। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। सभा सदस्य केसरीचंद मालू ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। सुमन चौरडिया और मधु भूतोडिया ने गीतिका के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी मनीषाश्रीजी ने महावीर के सिध्दांतों का उल्लेख करते हुए कहा कि आज के युग में महावीर की जरूरत है। महिला मंडल मंत्री डॉ. पूजा फूलफगर ने गीतिका का संगान किया। साध्वी वृंद द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। सफल संयोजन साध्वी मुकुलयशा जी द्वारा किया गया।

लाडनूं

भगवान महावीर की जन्म जयंती का महोत्सव लाडनूं की पावन धरा पर उल्लासपूर्वक मनाया गया। प्रभात फेरी की शुरुआत वृद्ध सेवा केंद्र की व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशा जी के मंगल पाठ से हुई। जैन ध्वज, नगाड़ा, निशान और आठ रोचक झांकियों के साथ भगवान महावीर के जन्मोत्सव को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

उप पुलिस अधीक्षक विक्की नागपाल, जैन विश्व भारती के संरक्षक भागचंद बरड़िया, पूर्व अध्यक्ष धर्मचंद लुंकड़, उपमंत्री नवीन बैगानी, तथा संचालन समिति सदस्य राजेन्द्र खटेड़ ने हरी झंडी दिखाकर प्रभात फेरी को रवाना किया। झांकियों में ज्ञानशाला, कन्या मंडल, महिला मंडल, विमल विद्या विहार, आदर्श बाल मंदिर, आदर्श विद्या मंदिर द्वारा विभिन्न विषयों की सुंदर प्रस्तुति हुई। द्वितीय चरण में ऋषभ द्वार में सेवा केंद्र की व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशा जी ने कहा कि सदियाँ बीत गईं, लेकिन महावीर का नाम आज भी जीवित है। महावीर स्वामी ने शरीर, इंद्रियां, बुद्धि और मन को तपाया। अगर हम हीरा नहीं बन सकते, तो व्यापारी तो बनें; अगर हम मकान नहीं बन सकते, तो चार दीवारें तो बनें। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। साध्वी खुशीप्रभा जी, साध्वी रोहिणीप्रभा जी, साध्वी स्वस्तिकप्रभा जी और समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा जी ने अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा से मंत्री राकेश कोचर, ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका सपना भंसली, पार्षद रेणु कोचर, राहुल बैद, समता कोठारी आदि ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल मंत्री राज कोचर, प्रचार-प्रसार मंत्री मीनाक्षी चौरड़िया और उनकी पूरी टीम, ज्ञानशाला की टीम, तेरापंथ सभा से कोषाध्यक्ष महेंद्र बाफना का झांकियों के निर्माण में विशेष परिश्रम रहा। आयोजन में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, जैन विश्व भारती, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, अणुव्रत समिति लाडनूं, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, ओसवाल मित्र मंडल, नगरपालिका, पुलिस प्रशासन, तथा विश्वविद्यालय के सदस्यगण उपस्थित रहे। गुरुकुल एकेडमी, लक्की डिफेंस एकेडमी, बाल मंदिर स्कूल, विमल विद्या विहार स्कूल, आदर्श विद्या मंदिर स्कूल और आदर्श बाल मंदिर स्कूल के अध्यापक एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन साध्वी युक्तिप्रभा जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं भी उपस्थित रही।

कांचीपुरम

तीर्थंकर भगवान महावीर का 2624वां जन्म कल्याणक दिवस मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में श्री जैन संघ एवं तेरापंथी सभा के तत्वावधान में जैन स्थानक कांचीपुरम में आयोजित किया गया। भगवान महावीर का जन्म भारतीय संस्कृति में अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह की चेतना के जागरण का जन्म है, आत्म उत्थान की प्रेरणा का जन्म है, विज्ञान जगत के लिए खोज का जन्म है। भगवान महावीर ने कहा था - अप्पणा सच्च मेसेज्जा - स्वयं सत्य खोजो। आज का मानव पर की खोज में संलग्न है। उसका चिन्तन पदार्थ जगत के साथ जुड़ा हुआ है। ऐसे भगवान महावीर की आज के युग में अतीव प्रासंगिकता है। उन्होंने जो सिद्धान्त दिये वे केवल सुनने-पढने तक ही सीमित न रहे। भगवान महावीर का जीवन निष्पृह और जागरूक था। उनके जीवन में अनेकों कष्ट आए पर वे समभाव और सहिष्णुता के साथ उन्हें तिरोहित करते गए। आज के इस प्रसंग पर उनके कथनों को जीवन का अंग बनाने का प्रयास करें। ये विचार महावीर जन्म कल्याणक दिवस पर मुनि मोहजीत कुमार ने प्रकट किए। समारोह में मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि महावीर का दर्शन परम वैज्ञानिक है। भगवान आत्मदर्शन, पुरुषार्थ दर्शन की अटल ऊंचाईयों और गहराइयों को प्रकट किया, जहाँ तक आज का विज्ञान जगत पहुंचने का प्रयास कर रहा है। भगवान महावीर के द्वारा प्रतिपादित तत्वदर्शन विराटता और सूक्ष्मता से अभिमंडित है। समारोह का शुभारम्भ नमस्कार महामन्त्र एवं महावीर वन्दना से हुआ। तेरापंथ महिला मण्डल कांचीपुरम ने संगान किया। सभा अध्यक्ष इन्द्रचन्द धोका तथा जैन संघ की ओर से चैनराज जैन ने स्वागत किया। युवक परिषद के युवकों ने महावीर स्तुति, जैन समाज की ओर से ऋषभ जैन ने श्रद्धार्पण भाव प्रकट किए। सभा मंत्री राजेश गादिया ने आभार प्रकट किया। किलपॉक, चेन्नई के सभा मंत्री विजय सुराणा ने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मुनि भव्यकुमार जी ने किया।

जलगाँव

तीर्थंकर प्रभु महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक महोत्सव के उपलक्ष मे तेरापंथ सभा के अंतर्गत ज्ञानशाला द्वारा अणुव्रत भवन में भक्तामर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका रितु छाजेड ने अपने विचार रखे। बालक-बालिकाओं ने भक्तामर की गाथाओं की अत्यंत सुंदर ढंग से प्रस्तुति दी। सकल जैन समाज के कुल 29 बच्चों ने भाग लिया। भगवान महावीर जन्म कल्याणक समिति के अध्यक्ष राजकुमार सेठिया, मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष ललितभाई लोड़ाया, महेंद्रभाई जैन, प्रवीणभाई पगारिया, तेरापंथ समाज के अध्यक्ष पवन शामसुखा, ज्ञानशाला संयोजक नोरतमल चोरडिया, तेयुप अध्यक्ष पंकज सुराणा, सहित समस्त प्रशिक्षिकाएँ तथा समाज जन उपस्थित थे। प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में उमा सांखला व मनीषा डाकलिया ने भूमिका निभाई। संचालन रुचि सेठिया व प्रेक्षा पिंचा ने किया। भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याणक महोत्सव समिति द्वारा सकल जैन श्री संघ के तत्वावधान में स्थानीय छत्रपति संभाजीराजे नाट्य गृह में आयोजित कार्यक्रम में ज्ञानशाला के 27 बच्चों ने अत्यंत रोमांचकारी प्रस्तुति दी, जिसे काफी सराहा गया।

2624वें भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर श्रद्धासिक्त कार्यक्रम

अयनावरम, चैन्नई

चैन्नई महानगर के अयनावरम स्थित जैन दादावाड़ी में भगवान महावीर जन्म कल्याणक दिवस का आयोजन भव्य और विराट रूप में श्री जैन महासंघ द्वारा मूर्तिपूजक संप्रदाय के आचार्य युगोदयप्रभसूरीश्वरजी, स्थानकवासी सम्प्रदाय के समकितमुनि जी, एवं तेरापंथ धर्मसंघ के मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में समायोजित हुआ। मुनि दीप कुमार जी ने सारगर्भित श्रद्धाभिव्यक्ति देते हुए कहा - भगवान महावीर के सिद्धांत वर्तमान युग में बहुत प्रासंगिक हैं। वे कभी आउट ऑफ डेट नहीं होंगे। सदा अप टू डेट बने रहेंगे। भगवान महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकात के सिद्धान्त से हर समस्या का समाधान हो सकता है। विश्व में अनेक व्यक्ति प्रतिदिन जन्म लेते हैं पर सभी की जयंती नहीं मनाई जाती। जयंती उनकी मनाई जाती है जो अंधकार में निमग्न संसार को सत्य का प्रकाश दिखाते है। भगवान महावीर ऐसे ही महापुरुष थे। भगवान हमारी जुबान पर ही नहीं, जीवन में रहें। मुनिश्री ने जैन संस्कृति के गौरव को सुरक्षित बनाएं रखने का समाज से आह्वान किया। मुनिश्री ने कहा कि आज जैन एकता का सुन्दर रूप दिखाई देता है। इसमें आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी जैन एकता के कार्य को बहुत महत्व दिरा रहे हैं। आचार्य युगोदयप्रभसूरीश्वर जी ने कहा - परमात्मा की वाणी जगत कल्याणकारी है, जीवों को तारने वाली है। अपने जीवन में महावीर को अपनाएं, खानपान शुद्ध रखें। समकित मुनिजी ने कहा - पूर्वजों की पुण्याई से प्राप्त जैनत्व के मान-सम्मान को हमें आगे बढ़ाना चाहिए। अपने नाम के साथ सभी जैन भाई-बहन जैन लगाएं। कार्यक्रम में अतिथि विशेष वायुसेना के विंग कमांडर कुलदीप जैन, मुख्य अतिथि राजस्थान से विधायक लादूलाल पितलिया थे। जैन महासंघ के अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया ने स्वागत भाषण दिया। संचालन विपिन सतावत ने किया।

चितांबा

भगवान महावीर के 2624वें जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर चितांबा में आयोजित भव्य कार्यक्रम में साध्वी कीर्तिलता जी ने कहा - भगवान महावीर का संसार सोने के समान वैभवशाली था, परंतु उन्होंने उसे हँसते-हँसते त्याग दिया। वैभव चाहे जितना भी महान क्यों न हो, त्याग उससे कहीं अधिक महान होता है। जिसने वैभव इकट्ठा किया, वह सिकंदर बना और जिसने त्याग दिया, वह महावीर बना। कार्यक्रम में साध्वी शांतिलता जी ने कहा कि भगवान महावीर ने उस समय की अनीति और अव्यवस्था को दूर कर नीति और सत्य की राह दिखाई। साध्वी पूनमप्रभा जी ने मधुर गीत प्रस्तुत किया, वहीं साध्वी श्रेष्ठप्रभा जी ने अनेकांतवाद के सिद्धांत पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि हम इसे अपने जीवन में आत्मसात करें, तो किसी भी प्रकार के विवाद की गुंजाइश नहीं रहेगी। कार्यक्रम में ममता जैन, पलक भटेवरा और सुमित्रा बरड़िया ने भगवान महावीर के जन्म का सुंदर मंचन प्रस्तुत किया। जैनेतर समाज के युवकों ने भगवान महावीर के 14 स्वप्नों का प्रभावशाली प्रदर्शन कर दर्शकों की सराहना प्राप्त की। कार्यक्रम का शुभारंभ गहरी दंपतियों द्वारा मंगलाचरण और भगवान महावीर की अभिवंदना से हुआ। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा चितांबा के अध्यक्ष संजय मांडोत ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया और कहा कि चितांबा में इस प्रकार का आयोजन समरसता और आध्यात्मिक चेतना को सुदृढ़ करता है। इस कार्यक्रम में लगभग 47 गांवों से श्रद्धालु उपस्थित रहे। महासभा के उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू ने अध्यक्षता करते हुए सभा को संबोधित किया। इस अवसर पर तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत, तुलसी निकेतन समिति, उदयपुर के अध्यक्ष सुरेश दक, प्रज्ञा शिखर टाटगढ़ साहित्य संस्थान के अध्यक्ष देवराज आच्छा एवं कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग के राष्ट्रीय प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम के अंतिम चरण में बेंगलुरु से समागत भजन गायक संदीप बरड़िया ने भक्तिमय संध्या में अपनी मधुर प्रस्तुति दी।

महरौली

महाश्रमण भवन के विशाल हॉल में जैन समाज को संबोधित करते हुए 'शासनश्री' साध्वी सुव्रतां जी ने कहा - महापुरुष जब धरती पर अवतरित होते हैं तो शुभ बेला, शुभ लक्षण, शुभ ग्रह-नक्षत्र अपने आप आ जाते हैं। महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में हुआ। इसके सिवाय दीक्षा, केवल ज्ञान एवं निर्वाण की प्राप्ति भी इसी शुभ नक्षत्र में हुए। आपने अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत का पाठ पढ़ाया। जातिवाद का साम्राज्य हिलाया। स्त्री जगत को पुरुषों के तुल्य धर्म करने का अधिकार दिया। भगवान ने अपरिग्रह के संदर्भ में तीन सूत्र दिए -

1. अप्रामाणिकता से धन का अर्जन मत करो।
2. व्यक्तिगत स्वामित्व की सीमा करो।
3. अपने उपयोग में आने वाली वस्तुओं की सीमा करो।

'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा जी एवं साध्वी कार्तिक प्रभा जी ने महावीर के सिद्धांतों की व्याख्या करते हुए कहा - महावीर जयंती मनाना तभी सार्थक होगा जब आप महावीर के सिद्धांतों को गहराई से समझ कर अपने जीवन व्यवहारों में लाएंगे। साध्वी चिंतनप्रभा जी ने सुमधुर स्वरों से गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ महावीर अष्टकम से किया गया। उपासक विमल गुनेचा, दक्षिण दिल्ली के उपाध्यक्ष प्रदीप खटेड़, अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के सी जैन, महक बरडिया, रंजना दुगड़, रिद्धि, विश्वास व दक्षिण दिल्ली महिला मंडल से शारदा डूंगरवाल, रंजना खटेड़, एवं सुमन कोठारी ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का कुशलता पूर्वक संचालन संदीप डूंगरवाल ने किया। मनोज खटेड़ ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बीकानेर

बीकानेर में भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव श्रद्धा, साधना और समाजिक संदेशों के साथ भव्य रूप में मनाया गया। इस अवसर पर तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान महावीर सिद्ध पुरुष थे, जिन्होंने पहले स्वयं पर प्रयोग किया और फिर उपदेश दिए। संयम, आत्मानुशासन, और क्रोध की स्थिति में मौन धारण कर आत्म-विजय प्राप्त करना महावीर का मूल संदेश है। मुनिश्री ने वर्तमान समय में भौतिकतावाद, विवाहों में आडंबर, भोजन में अपव्यय आदि सामाजिक विकृतियों की आलोचना करते हुए संयम को जीवन का आधार बताया।

आचार्य धर्मधुरंधर जी ने कहा कि वर्तमान विश्व बारूद के ढेर पर खड़ा है। केवल परमात्मा की शरण में जाकर ही सुरक्षा संभव है। भगवान महावीर ने सिद्धांत रूपी नौका तैयार की है, जिससे भवसागर पार किया जा सकता है। साध्वी लब्धियशाजी ने भगवान महावीर के सिद्धांतों को आज भी उतना ही प्रासंगिक बताया जितना वह उस काल में थे। उन्होंने आग्रह, विग्रह और संग्रह को आज की प्रमुख समस्याएँ बताया तथा अनेकांतवाद को इनका समाधान बताया। उन्होंने कहा कि गुणानुवाद का अभ्यास कर समाज में समरसता लाई जा सकती है। साध्वी प्रशमयशाजी ने अपरिग्रह के सिद्धांत की व्याख्या करते हुए कहा कि धन का संग्रह नहीं, सीमित उपभोग मानव कल्याण का मार्ग है। भगवान महावीर का श्रावक आनंद इसका अनुपम उदाहरण है। उन्होंने विवाहों में हो रहे अपव्यय, फूलों की होली, पूल पार्टी और शराब आदि के प्रचलन को अहिंसक जैन समाज के लिए घातक बताया। उन्होंने जैन महासभा द्वारा चलाए जा रहे ₹21 व्यंजन सीमा अभियान" को अत्यंत सराहनीय बताया और कहा कि समाज के प्रतिष्ठित लोगों को इस अभियान से जुड़कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। जैन लूणकरण छाजेड़ ने जैन महासभा की गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। सुरेन्द्र बदानी ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया, मनोज सेठिया ने शोभा यात्रा की जानकारी दी, और महामंत्री मेघराज बोथरा ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन जीतू कोचर ने किया।

पीलीबंगा।

समणी डॉ. मंजूप्रज्ञा जी के सान्निध्य में जैन भवन, पीलीबंगा में सकल जैन समाज द्वारा भगवान महावीर जयंती का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण गीतिका से हुआ। मंचीय कार्यक्रम में सकल जैन समाज की ओर से कई प्रमुख वक्ताओं ने संबोधित किया। इनमें प्रदीप डागा, तेरापंथी सभा पीलीबंगा के अध्यक्ष मालचंद पुगलिया, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा संतोष देवी नौलखा, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अंजन बोथरा, महासभा एवं अभातेयुप के क्षेत्रीय सहयोगी सतीश पुगलिया, पुष्पा नाहटा एवं वरिष्ठ श्रावक मूलचंद बांठिया शामिल रहे। सभी वक्ताओं ने भगवान महावीर के सिद्धांतों को आज के युग में प्रासंगिक बताते हुए उनके दिखाए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। समणी डॉ. मंजूप्रज्ञा जी ने अपने वक्तव्य में भगवान महावीर के सिद्धांतों — अहिंसा, अपरिग्रह और समता — को आज के समय में अति आवश्यक बताया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा विश्व नवकार महामंत्र दिवस के अवसर पर दिए गए वक्तव्य का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने भी महावीर स्वामी के सिद्धांतों की सराहना करते हुए जल संरक्षण, परिग्रह त्याग, अहिंसा और समभाव को विश्व कल्याण का मार्ग बताया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन रौनक नाहटा एवं डालिम पुगलिया ने किया। सकल जैन समाज की ओर से भगवान महावीर के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने हेतु एक भव्य रैली का आयोजन किया गया। इस रैली में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों, कन्या मंडल, महिला मंडल, युवक परिषद सहित संपूर्ण श्रावक समाज ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रैली पीलीबंगा के आचार्य तुलसी सर्किल, आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्किल आदि प्रमुख मार्गों से होती हुई भगवान शीतलनाथ मंदिर पर पहुंचकर समाप्त हुई।

छापर

2624वें भगवान महावीर जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में 'भिक्षु साधना केंद्र' से प्रभात फेरी नगर के मुख्य मार्गों से गुजरती हुई निकली। भिक्षु साधना केंद्र में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में मुनि देवेंद्र कुमार जी ने भगवान महावीर के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा - भगवान महावीर का जीवन त्याग, संयम, करुणा और अहिंसा का प्रतीक है। हमें उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए तथा उनके बताए मार्ग का अनुसरण कर आत्मकल्याण की दिशा में बढ़ना चाहिए। तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी एवं मुनि आर्जव कुमार जी ने भी भगवान महावीर के जीवन चरित्र की प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, सभा के प्रवक्ता एवं वरिष्ठ श्रावक हुलासमल चोरडिया ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए भगवान महावीर के सिद्धांतों की प्रासंगिकता को रेखांकित किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 अप्रैल - 27 अप्रैल, 2025

संबोधि

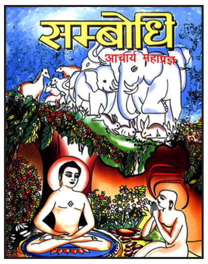

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बुद्ध एक गांव में आये। एक व्यक्ति बुद्ध पर क्रुद्ध था। वह आया और गालियां बकने लगा। बुद्ध सुनते रहे और हंसते रहे। क्रोध का उबाल इतना सघन हो गया कि वह उतने से ही शांत नहीं रहा। उसने क्रोधावेश में बुद्ध के मुंह पर थूक दिया। मुंह पोंछ कर बुद्ध बोले 'वत्स! और कुछ कहना है? आनंद गुस्से में आ गया। बुद्ध ने कहा- 'इसके पास शब्द नहीं रहे, तब थूक कर अपना क्रोध बाहर फेंक रहा है। तुम अपने को दंड मत दो।' वह व्यक्ति घर चला आया। क्रोध का नशा उतरा। रातभर अनुताप किया। सुबह फिर चरणों में उपस्थित हुआ। सिर चरणों में रख दिया। कहा-क्षमा करो! बुद्ध ने कहा-'किस बात की। मैं प्रेम ही करता हूं। चाहे कोई कुछ भी करे। प्रेम के सिवा मेरे पास और कुछ है ही नहीं।'

सूफी साधक वायजीद रात को अपनी मस्ती में भजन करते जा रहे थे। सामने एक युवक बाजे पर संगीत गाता हुआ आ रहा था। उसे वह भजन व्यवधान लगा। बाजे को वायजीद के सिर पर पटका और गालियां दी। बाजा टूट गया। सुबह वायजीद ने अपने आदमी के साथ एक मिठाई का थाल और पैसे भेजे। युवक ने पूछा क्यों? उस आदमी ने कहा- 'आपका बाजा टूट गया, इसलिए ये पैसे और गालियों से मुंह खराब हो गया इसलिए यह मिठाई भेजी है। युवक बड़ा शर्मिन्दा हुआ।

ब्रांकेई साधक के पास टोकियो युनिवर्सिटी का दर्शन-शास्त्री प्रोफेसर आया और पूछा 'धर्म क्या है? सत्य क्या है? ईश्वर क्या है?' बांकेई ने कहा-'इतनी दूर से चल कर आये हो, विश्राम करो, पसीना सुखाओ और चाय पीओ। शायद चाय से उत्तर मिल जाए।' उसने सोचा-क्या पागल है? कहां आ गया? खैर, रुका। चाय लेकर आया, कप भर दिया। नीचे तश्तरी थी वह भी भर गई। फिर भी बाकेई चाय उडेल रहा था। प्रोफेसर ने कहा-आप क्या कर रहे हैं? कहां है अब जगह? बांकेई ने कहा मैं भी तो यही देखता हूं कि तुमने प्रश्न तो इतने बड़े पूछे हैं, किन्तु भीतर जगह कहां है? जब खाली हो तब आना। उठकर चलने लगा। चलते-चलते कहा-अच्छा, खाली होकर आऊंगा। बाकेइ हंसा और बोला-फिर क्या आओगे?

धूर्त व्यक्ति बाहर मीठा होता है और भीतर अशुद्ध। वह विश्वास योग्य नहीं होता। खुला कुंआ खतरनाक नहीं होता। वह स्पष्ट होता है। किन्तु ऊपर से ढंका हुआ कुंआ खतरनाक होता है। एक बुढ़िया शहर से सामान खरीदकर अपने गांव लौट रही थी। कुछ देर बाद पीछे से एक घुड़सवार आया। वह उस गांव में ही जा रहा था। बुढ़िया ने पूछा और कहा-यह मेरी गठरी चौराहे पर रख देगा क्या भाई? घुड़सवार ने एक बार इन्कार कर दिया। थोड़ी दूर जाकर सोचा-न यह मुझे जानती है और न मैं इसे। अपने घर ले जाता गठरी। वापिस लौटा और मधुर स्वर में कहा-मां। लाओ गठरी ले जाऊं? बुढ़िया समझ गई। वह बोली-बेटा ! जो तेरे मन में कह गया वह मेरे कान में भी कह गया। अब मैं ही ले जाऊंगी।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

संघ - व्यवस्था

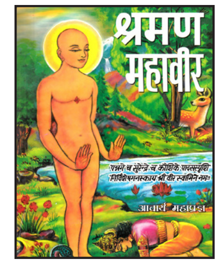

सामुदायिकता

भगवान् महावीर वैयक्तिक स्वतन्त्रता के महान् प्रवक्ता और सामुदायिक मूल्यों के महान् संस्थापक थे। उनके सापेक्षवाद का सूत्र था व्यक्ति-सापेक्ष समुदाय और समुदाय-सापेक्ष व्यक्ति।

स्वतन्त्रता और संगठन दोनों सापेक्ष सत्य हैं। एक की अवहेलना करने का अर्थ है दोनों की अवहेलना करना। इस सत्य को निर्युक्तिकार ने इस भाषा में प्रस्तुत किया है- 'जो एक मुनि की अवहेलना करता है, वह समूचे संघ की अवहेलना करता है और जो एक मुनि की प्रशंसा करता है, वह समूचे संघ की प्रशंसा करता है।

रुचि, संस्कार और विचार-ये व्यवस्था के सूत्र नहीं बन सकते। ये व्यक्तिगत तत्त्व हैं। दीक्षा-पर्याय यह सामुदायिक तत्त्व है। भगवान् ने इसी तत्त्व के आधार पर व्यवस्थाओं का निर्माण किया। मेघकुमार की घटना से इस स्थापना की पुष्टि हो जाती है।

मेघकुमार भगवान् के पास दीक्षित हुआ। रात के समय सब साधुओं ने दीक्षा-पर्याय के क्रम से सोने के स्थान का संविभाग किया। मेघकुमार सबसे छोटा था, इसलिए उसे दरवाजे के पास सोने का स्थान मिला।

भगवान् के साथ बहुत साधु थे। वे देहचिंता-निवारण स्वाध्याय, ध्यान आदि प्रयोजनों से इधर-उधर जाने-आने लगे। कोई मेघकुमार के हाथ को छू जाता, कोई पैर को और कोई सिर को। इस हलचल में उसे सारी रात नींद नहीं आई। रात का हर क्षण उसने जागते-जागते बिताया।

राजकुमार, कोमल शैया पर सोया हुआ और राज-प्रासाद के विशाल प्रांगण में रहा हुआ। कठोर शैया, दरवाजे के पास संकरा स्थान और आने-जाने वाले साधुओं के पैरों-हाथों का स्पर्श। इस विपरीत स्थिति ने मेघकुमार को विचलित कर दिया वह सोचने लगा- 'मैं महाराज श्रेणिक का पुत्र और महारानी धारिणी का आत्मज था। मैं अपने माता-पिता को बहुत प्रिय था। जब मैं घर में था तब ये साधु मेरा कितना आदर करते थे? मुझे पूछते थे। मेरा सत्कार-सम्मान करते थे। मुझे अर्थ और हेतु बतलाते थे। मीठे बोल बोलते थे। आज मैं साधु हो गया। इन साधुओं ने न मेरा आदर किया, न मुझे पूछा, न मेरा सत्कार-सम्मान किया, न मुझे अर्थ और हेतु बतलाया और न मधुर वाणी से मुझे संबोधित किया। मुझे एक दरवाजे के पास सुला दिया। सारी रात मुझे नींद नहीं लेने दी। इस प्रकार मैं कैसे जी सकूंगा? मैं इस प्रकार की नारकीय रातें नहीं बिता सकता। कल सूर्योदय होते ही मैं भगवान के पास जाऊंगा, और भगवान् को पूछकर अपने घर लौट जाऊंगा।

इस घटना के बाद भगवान् महावीर ने नव-दीक्षित साधुओं को उस आनुक्रमिक व्यवस्था से मुक्त कर दिया। उन्हें अनेक कार्यों में प्राथमिकता दी। उनकी सेवा करने वाले तीर्थंकर बन सकते हैं, मेरी स्थिति को प्राप्त हो सकते हैं, यह घोषणा कर भगवान् ने नव-दीक्षित साधुओं की प्राथमिकता को स्थायित्व दे दिया और चिर-दीक्षित साधुओं की व्यवस्था दीक्षा-पर्याय के क्रमानुसार संविभागीय पद्धति से चलती रही।

सेवा

सेवा सामुदायिक जीवन का मौलिक आधार है। इस संसार में विभिन्न रुचि के लोग होते हैं भगवान् महावीर ने ऐसे लोगों को चार वर्गों में विभक्त किया है-

१. कुछ लोग दूसरों से सेवा लेते हैं, पर देते नहीं।

२. कुछ लोग दूसरों को सेवा देते हैं, पर लेते नहीं।

३. कुछ लोग सेवा लेते भी हैं और देते भी हैं।

४. कुछ लोग न सेवा लेते हैं और न देते हैं।

सामुदायिक जीवन में सेवा लेना और देना-यही विकल्प सर्वमान्य होता है। भगवान् ने इसी आधार पर सेवा की व्यवस्था की।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री भारमल जी युग

साध्वीश्री मगदूजी (नानसमा (नांदेसमा) दीक्षा क्रमांक 99

साध्वीश्री प्रकृति से बहुत सरल, धैर्यवती और ज्ञान ध्यान में उद्यम करने वाली थी। आपने अनेक तपस्याएं की पर विवरण उपलब्ध नहीं है। आपके साथ रहने वाली साध्वियां भी तप के क्षेत्र में आगे बढ़ी। अन्त में 7 दिन के संथारे में समाधि मरण को प्राप्त किया।

– साभार: शासन समुद्र –

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

दुःख का कारण : राग

रास्ते दो प्रकार के हैं-एक है इच्छा का रास्ता, दूसरा है संतोष का रास्ता, संयम का रास्ता। इच्छाओं के असीमित होने से अन्त में जाकर आदमी दुःखी होता है। इसलिए महर्षियों ने कहा- सुख प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को संतोष धारण करना चाहिए। ज्यों-ज्यों आदमी की उम्र बढ़ती है फिर भी उसकी लालसा बूढ़ी नहीं होती। संस्कृत साहित्य में कहा है-

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः, तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याताः, तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।।

भोग क्या भोगे हैं हम स्वयं भोग लिये गए हैं। तपस्या नहीं की किन्तु आदमी लालसा में स्वयं तप गया। समय क्या बीता आदमी स्वयं बीत गया। तृष्णा जीर्ण नहीं हुई किन्तु मनुष्य का शरीर जीर्ण हो गया।

यह स्थिति है संसार की। बूढ़े आदमी का शरीर गल जाता है, जीर्ण-शीर्ण हो जाता है। मुंह दंतविहीन हो जाता है। लाठी के सहारे चलता है। इतना सब होने पर भी आशा कमजोर नहीं होती। इस स्थिति में कामनाओं को छोड़ना तो बहुत कठिन कार्य है। कहा भी है-

कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं।

अगर दुःख को दूर करना चाहते हो तो कामनाओं को दूर करो, इच्छाओं को दूर करो। अगर इच्छाएं समाप्त हो जाएंगी तो आदमी अपने आप सुखी बन जाएगा। इच्छाएं और कामनाएं ज्यों-ज्यों बढ़ती जाएंगी दुःख भी बढ़ता जाएगा। कामना और इच्छाओं पर विजय पाना ही दुःख पर विजय पाना है। इच्छा आकाश के समान अनन्त होती है। उसकी सीमा नहीं होती। धन से आदमी सुखी नहीं हो सकता। धन जीवनयापन के लिए महत्त्वपूर्ण हो सकता है किन्तु जब तक व्यक्ति अपनी आकांक्षाओं को सीमित नहीं करता, लालसा को कम नहीं करता, वह वास्तव में सुखी नहीं हो सकता। जो वस्तु वर्षों से साथ रह जाती है, उसके प्रति इतना राग होता जाता है कि उसके छूटते ही व्यक्ति दुःख की अनुभूति करने लगता है।

यह संसार तो एक धर्मशाला है। यहां लोग आते हैं। कुछ दिन रहकर चले जाते हैं। जब तक मकान के प्रति, पदार्थ के प्रति, काम-भोग के प्रति-राग है, तब तक आत्मशांति या सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। ज्योंही अपनेपन का भाव आता है, दुःख हो जाता है। अपनेपन की भ्रान्ति मिटती है तो दुःख मिट जाता है-

'एक सेठ-संतों के पास बैठा था। इतने में ही उसका बड़ा लड़का आया और बोला-पिताजी! अपने मकान में तो आग लग गई है। आप चलो, उसे संभालो। बस यह सुनते ही सेठ तो रोने लग गया। इतने में ही उसका दूसरा लड़का आया, बोला-पिताजी! आप रोओ मत, जिस मकान में आग लगी है वह मकान तो हम बेच चुके हैं। इतना सुनते ही सेठ ने रोना बंद कर दिया। और वह सहजभाव में आ गया। इतने में ही तीसरा लड़का आया, उसने कहा पिताजी! जिस मकान में आग लगी है वह मकान अपना ही है। उसे बेचने की बात चली थी किन्तु अभी तक बेचा नहीं है। सेठ ने फिर रोना शुरू कर दिया। जब तक अपनेपन का भाव था तब तक सेठ को दुःख था। अपनेपन का भाव मिटा तो दुःख भी मिट गया। ऐसा क्यों हुआ? यह सब राग के कारण हुआ। जो व्यक्ति समता और वीतरागता की साधना करता है वही पूर्ण सुखी हो सकता है।

भयंकर बीमारियों का भी एक कारण है राग। इसलिए जीवन को शांत और सुखी बनाने के लिए राग को कम करना होगा तथा वीतरागता का अभ्यास करना होगा। सामान्य आदमी पूर्णतया वीतरागी नहीं हो सकता, फिर भी समता और वीतरागता की सामान्य साधना हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है।

धन के प्रति भी ज्यादा आसक्ति या ज्यादा राग-भाव अगर है तो वह भी दुःखदायी ही है। जहां भी ज्यादा आसक्ति है वहां सुख नहीं हो सकता। राग-भाव साधना में बहुत बड़ी बाधा है। आवश्यकता है हम राग को कम करें, सुखी जीवन जीने का प्रयन करें।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें

https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु

abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

मई 2025

सप्ताह के विशेष दिन

30 अप्रैल	अक्षय तृतीया (वर्षीतप समापन)
01 मई	भगवान अभिनन्दन च्यवन कल्याणक
04 मई	भगवान धर्मनाथ च्यवन कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री डालमचन्दजी युग

मुनिश्री छोगमलजी (देशनोक) दीक्षा क्रमांक 349

आपने उपवास से लेकर दस दिन तक लड़ीबद्ध तप किया। कुल तप तालिका इस प्रकार है- उपवास/1700, 2/44, 3/8, 4/3, 5/6, 6/3, 7/3, 8/3, 9/1, 10/1 कुल दिन - 1936, जिनके 5 वर्ष 4 माह 16 दिन होते है।

- साभार: शासन समुद्र -

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 अप्रैल - 27 अप्रैल, 2025

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002** पर व्हाट्सअप्प अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
सेवा संस्कार संगठन
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

मात्र 85 दिन में की दो बड़ी तपस्याएँ

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सहवर्ती मुनि नमिकुमार जी ने गंगाशहर में मात्र 85 दिनों के भीतर 39 दिन और 23 दिन की दो बड़ी तपस्याएँ कर सभी को विस्मित कर दिया। इससे उनकी कर्म निर्जरा तो हुई ही, साथ ही तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना भी हुई।

इस ऐतिहासिक अवसर पर मुनि कमलकुमार जी ने तपस्वी मुनिश्री की प्रशंसा करते हुए कहा कि मुनि नमि कुमारजी की साधना अभी और आगे बढ़ने की थी, लेकिन मैंने उन्हें 39 तक की तपस्याओं की जो लड़ी अधूरी थी, उसे पहले पूर्ण करने का सुझाव दिया। अब 17, 22 और 24 दिन की तीन तपस्याएं शेष हैं। इन तीनों के साथ 39 की संपूर्ण लड़ी पूर्ण हो जाएगी।

इस अवसर पर मुनिश्री ने तपस्या की अनुमोदना करते हुए स्वरचित गीतिका का सस्वर संगान कर तप वर्धापन किया। कार्यक्रम में मुनि श्रेयांसकुमार जी, मुनि विमलविहारी जी, मुनि प्रबोध कुमार जी, मुनि मुकेशकुमार जी ने अपने विचारों के साथ तप अनुमोदना की। मुनि प्रबोधकुमार जी ने साध्वी परमयशा जी और साध्वी विनम्रयशा जी के विचारों का वाचन किया। तो

लाराम सामसुखा, धर्मेंद्र डाकलिया, मनोज छाजेड़, आराध्या गोलछा आदि ने गीत और उत्साहवर्धक वक्तव्यों से वातावरण को आध्यात्मिक उल्लास से भर दिया।

2624वें भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर श्रद्धासिक्त कार्यक्रम

कोलकाता

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में 2624वां भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव का भव्य आयोजन महासभा भवन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता द्वारा किया गया। इस अवसर पर महासभा कोलकाता, वृहत्तर कोलकाता की संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी, गणमान्य अतिथि एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, मध्य कोलकाता द्वारा मंगलाचरण से हुआ। सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों का अभिनंदन किया।

अपने उद्बोधन में मुनि जिनेशकुमार जी ने भगवान महावीर के जीवन को भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल नक्षत्र बताते हुए कहा - वे अध्यात्म के महासूर्य, समता के महान साधक, करुणा के सागर और ज्ञान के अप्रतिम धारक थे। राजसी वातावरण में जन्म लेने के बावजूद वे विलासिता से कोसों दूर रहे और अनासक्ति, अनाग्रह, अनावेश व अनाकांक्षा का जीवन जिया।

उन्होंने भगवान महावीर को तीर्थंकर, त्रिकालदर्शी और महासिद्ध शक्तियों से संपन्न बताते हुए कहा कि उनका जीवन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस युग में था। उनके सिद्धांत – अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत – आज के युग की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। कार्यक्रम में मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। मंच संचालन मुनि परमानंद जी द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया। इस अवसर पर महासभा पंचमंडल सदस्य सुरेश गोयल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम ईस्ट जोन के कोऑर्डिनेटर प्रवीण सिरोहिया तथा तेयुप कोलकाता मेन के अध्यक्ष विवेक सुराणा ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण विभिन्न ज्ञानशालाओं द्वारा प्रस्तुत प्रेरक लघु नाटिकाएं रहीं। टॉलीगंज ज्ञानशाला ने 'व्यसनों की विनाश लीला', साउथ कोलकाता ज्ञानशाला ने 'जयंती श्राविका के प्रश्नोत्तर', पूर्वांचल ज्ञानशाला ने 'क्या कहता है जैन धर्म', उत्तर हावड़ा ज्ञानशाला ने 'आनंद श्रावक का अवधिज्ञान', साउथ हावड़ा ज्ञानशाला ने 'एक सामायिक का मूल्य' विषयों पर प्रस्तुति दी। इन लघु नाटिकाओं का कुशल संचालन विजय बावलिया एवं विजय चौपड़ा ने किया। नाटिकाओं का मूल्यांकन प्रकाश मालू, सुशीला पुगलिया एवं संगीता सेखाणी द्वारा किया गया। जिनमें प्रथम स्थान पर दक्षिण हावड़ा, द्वितीय - उत्तर हावड़ा सभा और तृतीय - दक्षिण कोलकाता सभा की ज्ञानशाला रही। सभा के कोषाध्यक्ष प्रमील बाफणा ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया।

हनुमानगढ़ जं.

भगवान महावीर के 2624वें जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में तेरापंथ सभा भवन हनुमानगढ़ जंक्शन में भव्य कार्यक्रम का आयोजन साध्वी सूरजप्रभा जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण के संगान से हुआ। साध्वी सूरजप्रभा जी ने अपने प्रवचन में बताया कि भगवान महावीर ने तप, संयम और आत्मचिंतन के माध्यम से अरिहंत पद को प्राप्त किया। साध्वी डॉ. लावण्ययशा जी ने महावीर के सिद्धांतों की आधुनिक सन्दर्भ में प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला, जबकि साध्वी नैतिकप्रभा जी ने भगवान महावीर के जीवन से प्रेरणादायक दृष्टांतों की मनोहारी प्रस्तुति दी। मुख्य वक्ता और गणमान्य अतिथियों में आंचलिक सभा अध्यक्ष प्रकाश जैन, महामंत्री ऋषभ चौरडिया, पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र कोठारी, BJS अध्यक्ष विजय लूनावत, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष मनोज गोलछा, अणुव्रत मंत्री आनंद जैन एवं टाउन सभा अध्यक्ष संजय बांठिया ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में 'निखर-2024' में तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले डॉ. पुनीत जैन, गौरव जैन, योसिका, प्रिया जैन, वर्षा बांठिया और हिमांशी जैन ने गीतिका के माध्यम से भावाभिव्यक्ति की। हनुमानगढ़ जं. के बच्चों द्वारा प्रस्तुत कव्वाली और नाटक दर्शकों के बीच विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। नवगठित महिला मंडल द्वारा भगवान महावीर के जन्मोत्सव पर आधारित सुंदर नाटिका का मंचन किया गया, वहीं टाउन महिला मंडल और ज्ञानशाला की प्रस्तुतियाँ भी अत्यंत सराहनीय रहीं। शपथ ग्रहण समारोह में तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल के सदस्यों को जैन संस्कार विधि के माध्यम से संस्कारक भरतऋषि रांका एवं संस्कारक सतीश पुगलिया ने शपथ संस्कार विधि संपन्न करवाई। सभा अध्यक्ष सुभाष बांठिया ने शपथ ग्रहण करवाया एवं दोनों संस्कारकों का अभिनंदन करते हुए माला पहनाकर सम्मानित किया। हनुमानगढ़ जं., टाउन, धोलीपाल, लीलावली सहित आसपास के क्षेत्रों से श्रद्धालु उपस्थित रहे। मंच संचालन पंकज तातेड़ द्वारा किया गया।

राजलदेसर

स्थानीय तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी ठाणा 7 के सान्निध्य में 2624वां भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव अत्यंत श्रद्धा, उल्लास एवं उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी वृंद द्वारा महावीर अष्टकम के संगान से हुआ। तत्पश्चात 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में भगवान महावीर के जीवन दर्शन को श्रावक समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा — महावीर ने हमें अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत जैसे महान सिद्धांत प्रदान किए। अहिंसा सभी प्राणियों को अपने समान समझने की प्रेरणा देती है, अपरिग्रह भोगवादी प्रवृत्तियों से बचने का संदेश देता है, और अनेकांतवाद सह-अस्तित्व की भावना के साथ समस्याओं के समाधान का मार्ग दिखाता है। साध्वीश्री के अनुसार भगवान महावीर के वचनों को अपने जीवन में अपनाकर आत्मकल्याण की दिशा में अग्रसर हुआ जा सकता है। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के बालकों ने 'हमारा भी अस्तित्व है' शीर्षक से एक सुंदर सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। किशोर मंडल एवं कन्या मंडल ने 'कैसे सम्यक्त्व का दीप जले' विषयक भावपूर्ण प्रस्तुति द्वारा उपस्थितजनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। साध्वी कीर्तिरेखा जी, साध्वी कमलयशा जी एवं साध्वी चैत्यप्रभा जी ने अपने गीतों व वक्तव्यों के माध्यम से भगवान महावीर के जीवन एवं शिक्षाओं को सारगर्भित ढंग से प्रस्तुत किया। तेयुप अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल एवं प्रेमरत्न पांडे ने गीत एवं विचारों के माध्यम से कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दी। भानुप्रिया दुगड़ ने मंच से रोचक प्रश्न पूछकर संवाद को जीवंत बनाए रखा। सभा के मंत्री कमल दुगड़ ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया। सभा अध्यक्ष राजकुमार विनायक एवं देवकीनंदन तोदी ने ज्ञानशाला के सभी प्रतिभागी बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार प्रदान किए। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी इन्दुयशा जी द्वारा किया गया। पूर्व प्रातःकालीन अहिंसा रैली तेरापंथ भवन से नगर के मुख्य मार्गों से गुजरते हुए पुनः तेरापंथ भवन पर आकर सम्पन्न हुई। रैली का प्रमुख आकर्षण भगवान महावीर के जीवन पर आधारित सजीव झांकी रही। तेरापंथ सभा, ते.यु.प., महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला के छात्र-छात्राएं एवं आदर्श विद्या मंदिर के शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए।

266वें भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस पर विविध कार्यक्रम

बीदासर

साध्वी प्रमिलाकुमारी जी एवं समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में 266वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस बड़े ही उत्साह, श्रद्धा एवं आध्यात्मिक वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नवकार महामंत्र के मंगल उच्चारण के साथ हुआ। इसके उपरांत साध्वी वृंद द्वारा नवरात्रि का नवान्हिक आध्यात्मिक अनुष्ठान कराया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु सहभागी बने। साध्वी प्रमिलाकुमारी जी ने अपने उद्बोधन में आचार्य भिक्षु की आध्यात्मिक दृष्टि एवं शुद्धाचार के प्रति समर्पण को रेखांकित करते हुए कहा - आचार्य भिक्षु ने शिथिलाचार का प्रतिकार कर आगम के गहन अध्ययन से प्राप्त नवनीत को ही सत्य का साक्षात्कार माना। उनका उद्देश्य स्पष्ट था – ₹मर पूरा देस्यां, आत्मा रा कारज सारस्यां।" उन्होंने बताया कि संत भीखणजी ने गुरु के साथ अनेक चर्चाओं के उपरांत, निष्कर्ष न निकलने पर, साहसिक कदम उठाते हुए अभिनिष्क्रमण कर बगड़ी के श्मशान में प्रथम प्रवास किया। तप और आत्मजागृति के माध्यम से स्थापित हुआ तेरापंथ आज जैन धर्म का एक अनुशासित, प्रगतिशील और एकरूप संगठन है।

साध्वी मंजुयशा जी ने आचार्य भिक्षु को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा, "वे एक क्रांतिकारी संत थे। आज्ञा, मर्यादा और अनुशासन की नींव पर उन्होंने तेरापंथ की आधारशिला रखी, जिसे भावी आचार्यों ने अपने परिश्रम से मजबूत किया।"

साध्वी वृंद द्वारा प्रस्तुत सामूहिक गीत ने समस्त धर्म परिषद को भावविभोर कर दिया। साध्वी विमलप्रज्ञा जी तथा तेरापंथ सभा बीदासर के मंत्री हनुमान मल सेठिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कांकरोली

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस श्रद्धा, भावना एवं उत्साह के साथ मनाया गया। साध्वी रचनाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा- इस अवसर्पिणी काल में एक ऐसे महापुरुष प्रकट हुए जिनका जीवन लक्ष्य केवल सत्य की प्राप्ति था – वे थे आचार्य भिक्षु। जब उन्होंने मुनि अवस्था में भगवान महावीर की वाणी से गुम्फित आगमों का अध्ययन किया, तो उन्हें बोध हुआ कि उनकी साधना आगम सम्मत नहीं है। उन्होंने गुरु रघुनाथ जी से समाधान की जिज्ञासा की, किंतु वह समाधान उन्हें संतुष्ट नहीं कर सका।" साध्वीश्री जी ने आगे कहा, "संयोगवश राजनगर की घटना ने उन्हें आगमों पर पुनर्विचार का अवसर दिया। इस घटना ने उन्हें अंतर्बोध दिया और उन्होंने निडरता के साथ अभिनिष्क्रमण किया। संघर्ष और साधना से तेरापंथ का अमृत निकला, जो आज हम सबके लिए साधना का राजमार्ग बना है।" कार्यक्रम में साध्वीवृंद द्वारा सुमधुर गीत प्रस्तुत किया गया। महिला मंडल द्वारा भक्ति गीत की मनोहारी प्रस्तुति दी गई। साथ ही वर्षीतप पूर्ण करने वाली बहनों का सम्मान किया गया। सभा के अध्यक्ष लाभचंद बोहरा ने अपने विचार साझा करते हुए आचार्य भिक्षु के जीवन से प्रेरणा लेने का संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन धर्मेन्द्र मेहता ने किया।

कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली

तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्य भिक्षु के 266वें अभिनिष्क्रमण दिवस का आयोजन साध्वी कुन्दनरेखा जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ सभा दक्षिण दिल्ली के तत्वावधान में कैलाश कॉलोनी स्थित गेलड़ा सदन में अत्यंत श्रद्धा, उल्लास एवं गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखा जी ने आचार्य भिक्षु के जीवन व संघर्ष को श्रद्धा से स्मरण करते हुए कहा, "चैत्र कृष्णा नवमी के दिन बगड़ी ग्राम से आचार्य भिक्षु ने महावीर वाणी को चरितार्थ करने हेतु प्रस्थान किया। उनका अभिनिष्क्रमण आगमानुसार आचार-विचार के पालन, सही साधन के प्रयोग, और लौकिक व लोकोत्तर धर्म के विवेकपूर्ण भेद की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम था। उन्होंने श्मशान में जैतसिंह जी की छतरी के नीचे पहली रात व्यतीत कर अपने त्याग और तपस्या का नया अध्याय लिखा।" साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा, "आचार्य भिक्षु का जीवन संघर्षों से भरा था, लेकिन उन्होंने झुकना नहीं सीखा। उन्होंने हमारे लिए एक अनुशासित, स्पष्ट और आध्यात्मिक पथ का निर्माण किया, जो आज 'तेरापंथ' के रूप में प्रतिष्ठित है।

यह सब उनके बलिदान, महान आचार्यों के पुरुषार्थ और वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी की तपशक्ति का परिणाम है।" कार्यक्रम के मुख्य वक्ता, तेरापंथ सभा दक्षिण दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा - आचार्य भिक्षु तेरापंथ धर्मसंघ की आत्मा हैं। पंद्रह वर्षों तक विपरीत परिस्थितियाँ रही, तीन वर्षों तक चार तीर्थ नहीं बन पाए, 36 वर्षों तक संतों की संख्या नहीं बढ़ी, फिर भी वे अडिग रहे। आज वही धर्मसंघ अध्यात्म का ध्वजवाहक बनकर महावीर वाणी का प्रकाश जन-जन में पहुँचा रहा है।

इस भव्य आयोजन में तेरापंथ सभा दक्षिण दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष संजय चौराड़िया, हीरालाल गेलड़ा, टीपीएफ नार्थ ज़ोन संयोजक राजेश गेलड़ा, राजेश भंसाली, शिक्षा भंसाली, चेतना भंसाली, अंजना गेलड़ा, रोमी दुगड़, वृद्धि दुगड़, मिलापचंद गेलड़ा आदि ने गीत, कविता, भाषण व मुक्तकों के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति दी। गेलड़ा परिवार द्वारा सामूहिक मंगलाचरण प्रस्तुत कर वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जाओं से भर दिया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी कल्याणयशा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक अलबेले संत थे, जिन्होंने आत्महित हेतु जीवनपर्यंत कष्टों से संघर्ष किया। उनका जीवन अध्यात्म, आत्मविश्वास और ज्ञान-चरण-दर्शन की त्रिवेणी से आलोकित था।

जयपुर

'शासन गौरव' साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में आचार्यश्री भिक्षु का 266वां अभिनिक्रमण समारोह भक्ति की अभिनव ऋचाओं के साथ सम्पन्न हुआ। श्यामनगर स्थित भिक्षु साधना केन्द्र के द्वि-शताब्दी वर्ष के संदर्भ में 65 वर्ष पूर्व बगडी में आयोजित स्मृतियों को साझा करते हुए गुरूदेव श्री तुलसी द्वारा समुच्चारित गीत प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर का संगान किया।

आपने कहा - आचार्य श्री भिक्ष धर्मक्रांति के पुरोधा थे। वे महान तत्वदर्शी थे। सत्यत्कत्व के खोजी थे। वे महान ध्यान योगी थे, सिद्ध पुरूष थे। व्यक्तित्व निर्माण, साहित्य निर्माण के कुशल शिल्पी थे। संगठन की स्वस्थता एवं चिरंजीविता के महान मंत्रदाता थे। वर्तमान के संदर्भ में साध्वीश्री ने श्रावक समाज को गुरूदृष्टि की आराधना एवं संघीय जीवन में एकता और अनुशासन की प्रेरणा दी।

साध्वी मधुलेखा जी, साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने आचार्यश्री भिक्षु के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति समर्पित की। साध्वी समितिप्रभा जी ने साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभाजी द्वारा रचित कविता प्रस्तुत की। तेरापंथी सभा जयपुर के अध्यक्ष शांतिलाल गेलड़ा, आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी के महामंत्री मर्यादा कोठारी, संदीप भंडारी आदि ने वक्तव्य, गीत के माध्यम से अपने अराध्य के चरणों में अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का सुंदर संचालन महिला मंडल सी स्कीम की अध्यक्षा प्रज्ञा सुराणा ने किया।

पीलीबंगा

आचार्य श्री भिक्षु के 266वें अभिनिष्क्रमण दिवस के अवसर पर स्थानीय जैन भवन में एक भावपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन समणी डॉ. मंजूप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत सामूहिक गीतिका एवं मंगलाचरण से हुआ।

तेरापंथ के आद्य आचार्य भिक्षु के जीवन, तप, साधना एवं त्याग को स्मरण करते हुए वक्ताओं ने उनके आदर्शों को आज के युग के लिए प्रासंगिक बताया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष मालचंद पुगलिया, महासभा के आंचलिक प्रभारी देवेंद्र बांठिया, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के क्षेत्रीय प्रभारी सतीश पुगलिया, जैन संस्कारक राजकुमार छाजेड़, विनोद देवी छाजेड़, पुष्पा नाहटा, ओम पुगलिया एवं प्रीति डाकलिया ने गीतिका, मुक्तक एवं वक्तव्यों के माध्यम से आचार्य भिक्षु के प्रति भावांजलि प्रकट की।

समणी डॉ. मंजूप्रज्ञा जी ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से आचार्य भिक्षु के संघर्षमय जीवन एवं उनके द्वारा स्थापित अनुशासन व नवाचार की प्रेरणादायक झलक प्रस्तुत की। समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने भी विचार साझा किए।

कार्यक्रम का संचालन निर्जरा पुगलिया ने कुशलता से किया। आयोजन में श्रावक समाज की उपस्थिति उत्साहजनक रही।

उधना

जैन श्वेतांबर तेरापंथ के संस्थापक एवं धर्म क्रांति के जनक आचार्य श्री भिक्षु के 266वें अभिनिष्क्रमण दिवस को जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, उधना के तत्वावधान में तेरापंथ भवन, उधना में श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सामूहिक सामायिक एवं जप अनुष्ठान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सभा अध्यक्ष निर्मल चपलोत के स्वागत भाषण से हुई।

उन्होंने कहा - आचार्य भिक्षु ने आगम साहित्य का गहन अध्ययन कर धर्म के शुद्ध स्वरूप को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। आज तेरापंथ की जो प्रतिष्ठा है, उसमें उनके त्याग, समर्पण और बलिदान की अमिट छाप है। प्रवक्ता उपासक अर्जुन मेड़तवाल ने अपने वक्तव्य में आचार्य भिक्षु के संघर्षमय जीवन की झलक प्रस्तुत करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु एक महान कर्मयोगी थे। उन्होंने धर्म में व्याप्त शिथिलाचार और अनुशासनहीनता का विरोध किया। सामाजिक बहिष्कार, भोजन और पानी की कमी, तथा रहने के लिए स्थान न होने जैसी कठिन परिस्थितियों में भी वे डटे रहे और धर्म सुधार की मशाल जलाए रखी। उनका जीवन संयम, संकल्प और सिद्धांत का प्रतीक बन गया। उपासक नेमीचंद कावड़िया एवं ललित कच्छारा ने सुमधुर गीतिकाओं के माध्यम से आर्य भिक्षु को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की भागीदारी रही। संचालन सभा मंत्री मुकेश बाबेल ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 अप्रैल - 27 अप्रैल, 2025

कम्प्लेन नहीं, कॉम्प्लीमेंट करें

राजाजीनगर।

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में 'कम्प्लेन नहीं कॉम्प्लीमेंट करें' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन राजाजीनगर में किया गया। साध्वीश्री ने कहा- जीवन में उत्तार चढ़ाव आते रहते हैं। जहाँ समूह होता है वहाँ सफलता-असफलता का लेखा-जोखा मिलाकर उसे सुधारने की कोशिश कर जीवन को सार्थक बनाएं। दाम्पत्य जीवन विश्वास की ठोस धरती पर जीने वाला जोड़ा होता है। पारस्परिक विश्वास पर शंका का डंका नहीं बजने दे। साध्वीश्री जी ने रिश्तों को अटूट रखने के मर्म सिखलाए। साध्वी मार्दवश्रीजी ने कहा - जो धर्म आदमी के आचरण व जीवन को न बदले, घर को स्वर्ग ना बना सके, ऐसा धर्म करने को कोई तैयार नहीं होता। अतः परिवार में सुख व समृद्धि बनाए रखना हेतु धर्म जरूरी है। इस अवसर पर तेरापंथ राजाजीनगर सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी एवं सभा परिवार, तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया एवं तेयुप परिवार, महिला मंडल अध्यक्ष उषा चौधरी एवं महिला मंडल परिवार एवं श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

पृष्ठ 1 का शेष

अध्यात्म विकास का...

व्यक्ति स्वयं का संयम करता है, इसमें भलाई है। स्वयं स्वयं पर अनुशासन न करे तो दूसरों के अनुशासन में रहना पड़ सकता है। एक आत्मानुशासन है, दूसरा परानुशासन है। स्वयं का निग्रह कर लिया, संतोष कर लिया, मन में लालसा नहीं है वह सुखी रहता है। लोभ दुःख का कारण है। जब संतोष का धन प्राप्त हो जाता है तो शेष सारे धन बेकार जैस लगने लग जाते हैं। जब हमारा मन वश में हो जायेगा तो हम सबको वश में कर सकते हैं। दूसरों पर अनुशासन करने वाला पहले स्वयं अनुशासित हो। हमारे मन की चंचलता ज्यादा न रहे। प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष चल रहा है। ध्यान के द्वारा मन को नियंत्रण में लाने का प्रयास किया जा सकता है।

आज नेपाल देश का नये वर्ष का दिन है। पूज्यवर ने नेपाली जनता के लिए मंगलपाठ सुनाने की कृपा करवायी। नेपाल में अनेक श्रावक-श्राविकाएं रहने वाले हैं। नेपाल में भी शांति रहे, अहिंसा-ईमानदारी के संस्कार विकसित होते रहें, जीवन में सत्पुरूषार्थ करते रहें।

पूज्यवर ने आगे फरमाया - जो महापुरूष होते हैं, उनकी वाणी तो सब के लिए कल्याणकारी हो सकती है। हम आचार्यश्री भिक्षु की उत्तरवर्ती परम्परा से हैं, आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत का अवदान दिया था तो आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने प्रेक्षाध्यान का अवदान दिया था। आज वाव आये हैं, जहां कभी गुरुदेव तुलसी पधारे थे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी भी वाव पधारे थे, अक्षय तृतीया का आयोजन हुआ था। मेरा भी एक बार आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के साथ और बाद में 2013 में आना हुआ था। इस मौके पर वाव के प्रायः सभी लोग आ गये हैं। सबको आध्यात्मिक सुख मिले, वह सुख त्याग से मिल सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि वाव पर आचार्यों की कृपा रही है तो वाव के श्रावकों ने भी संघ के लिए श्रम किया है। यहां श्रावकों की श्रद्धा दिखाई पड़ती है। आचार्यों के प्रति विनय का भाव है। गुजरात में तो आचार्यवर अमृत बरसा रहे हैं। आचार्य उपायज्ञ होते हैं। दुःख मुक्ति का उपाय बताते हैं। अधूरे ज्ञान को पूरा करने वाले गुरु होते हैं। गुरु हमें जीवन के रहस्यों को समझाने वाले होते हैं। हमें प्रकाश की ओर ले जाने वाले होते हैं।

पूज्यवर के स्वागत में वाव पथक के संयोजक विनीत भाई सिंघवी, तेरापंथ महिला मंडल, मूर्तिपूजक समाज से भीखाभाई डोशी, दीपाभाई डोशी, थराद त्रिस्तुति जैन संघ के ट्रस्टी जयंती भाई वकील, रावले से राणा गजेन्द्रसिंह, आदि ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल ने स्वागत गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सत्य बोलने का सहस...

कई व्यक्ति साधु बनकर इसे सफल बना लेते हैं। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी व्यक्ति धर्म की साधना कर सकता है। गृहस्थ जीवन में भी मानव जीवन को सफल बनाने के लिए ईमानदारी से व्यवहार करना चाहिए। झूठ, चोरी और छल-कपट ईमानदारी के विरोधी तत्व हैं। इनसे जीवन को मलिन नहीं बनाना चाहिए। अशुद्ध पैसे को घर में स्थान नहीं देना चाहिए। कहा गया है—"साच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप। जाके हिरदे साच है, ता हिरदे प्रभु आप।।"

यदि सत्य बोलने का साहस नहीं है, तो झूठ भी मत बोलो—मौन रखो। व्यक्ति को झूठ और कपट से बचने का प्रयास करना चाहिए। सच्चाई का रास्ता साफ होता है। सच बोलने वाले को कोई भय नहीं रहता। सच्चाई का पालन करने वाले के सामने संघर्ष या परेशानी आ सकती है, परंतु सच्चाई कभी परास्त नहीं होती। जीवन में ईमानदारी के साथ हर किसी के प्रति मैत्रीभाव होना चाहिए। नशीली चीजों के सेवन से बचना चाहिए।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि आज माडका आना हुआ है। माडका में पहले भी आना हुआ था। आचार्यश्री ने उपस्थित माडका के श्रद्धालुओं ने सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रतिज्ञाओं को स्वीकार करने का आह्वान किया तो समुपस्थित जनता ने उन प्रतिज्ञाओं को सहर्ष स्वीकार किया। पूज्यवर ने परिख परिवार में अच्छी धार्मिक भावना बनी रहने का आशीर्वाद प्रदान करवाया।

साध्वीप्रमुखाश्री ने फरमाया कि आचार्यश्री गुजरात का भ्रमण करते हुए जन-जन को संभाल रहे हैं। जहां आचार्यवर पधारते हैं, वहां श्रद्धा का प्रवाह बहने लगता है। गुरु के घर-आंगन में पधारने पर श्रावकों में सुख की अनुभूति होती है। व्यक्ति सुख से रहने के लिए वर्तमान में रहे। जिसके मन में सुख-शांति है, वही वास्तव में सब कुछ प्राप्त कर चुका होता है। सुखी वही होता है, जो अपनी आत्मा का दमन करता है, इन्द्रियों और मन को अपने वश में रखता है।

पूज्यवर के स्वागत में माडका तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हंसमुख भाई परीख, पूर्व सरपंच गुमानसिंह चौहान, मूर्तिपूजक समाज से विमल मेहता, हिम्मतभाई डोसी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। उपासक विशाल परीख ने मुमुक्षु बनने की भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। पूज्यवर ने महत्ती कृपा कर उन्हें मुमुक्षु के रूप में साधना करने की स्वीकृति प्रदान की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

भेद में छिपा अभेद

मूल्य और राजनीति का अपकर्ष - आज के समाज में धर्म और राजनीति, दोनों के मूल्यों में गिरावट आई है। जहां राजनीति के बिना समाज की व्यवस्था संभव नहीं, वहीं धर्म व्यक्ति के नैतिक उत्थान के लिए अनिवार्य है। प्राचीन दार्शनिकों ने राजनीति का लक्ष्य नैतिक समाज की स्थापना बताया था, लेकिन आज यह केवल सुख-सुविधाओं और सत्ता तक सीमित रह गई है। यदि हम इन दोनों विषयों पर निष्पक्ष दृष्टि डालें, तो इनके बीच सन्तुलन की आवश्यकता स्पष्ट रूप से सामने आती है।

धर्म और राजनीति - दो अलग कार्यक्षेत्र राजनीति समाज और राज्य की रचना करती है, जबकि धर्म व्यक्ति के चरित्र और मूल्यों को आकार देता है। धर्म समाज को नियंत्रित नहीं कर सकता, लेकिन व्यक्ति के आंतरिक बदलाव से समाज को प्रभावित कर सकता है। इतिहास में यह सिद्ध हो चुका है कि अनुशासन और व्यवस्था के बिना समाज स्थिर नहीं रह सकता। यदि हम ऐसा वातावरण बना सकें, जहाँ लोगों का आचरण स्वाभाविक रूप से अनुशासित हो, तो दंडनीति की आवश्यकता स्वतः समाप्त हो जाएगी।

स्वतंत्रता और सत्ता का द्वंद्व - स्वतंत्रता का प्रश्न धर्म और राजनीति के बीच सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है। धर्म व्यक्ति को आत्मिक स्वतंत्रता देता है, जबकि राजनीति स्वतंत्रता को सीमित कर व्यवस्था बनाए रखने का प्रयास करती है। लोकतंत्र ने व्यक्ति-स्वातंत्र्य को मान्यता दी है, लेकिन व्यावहारिक रूप से यह पूर्ण स्वतंत्रता नहीं है। अभिव्यक्ति और सोच की स्वतंत्रता धर्म की देन है, जबकि राजनीति इसे अपनी आवश्यकताओं के अनुसार नियंत्रित करती है।

शाश्वत और सामयिक मूल्यों का समन्वय - धर्म और राजनीति का संबंध सापेक्ष है—राजनीति को धर्म के नैतिक मूल्यों से प्रेरणा लेनी चाहिए, लेकिन दोनों की भूमिकाओं को मिलाना सही नहीं है। कुछ मूल्य, जैसे अहिंसा और सत्य, शाश्वत हैं, जो हर युग में प्रासंगिक रहते हैं। दूसरी ओर, समाज में समय के अनुसार सामयिक बदलाव आवश्यक हैं। यदि हम इन दोनों के बीच संतुलन स्थापित कर सकें, तो न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व की समस्याओं का समाधान संभव हो सकता है।

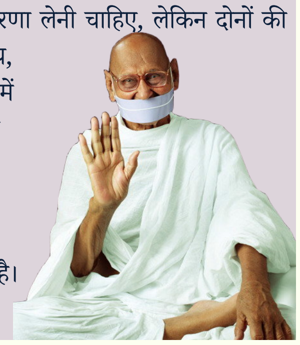

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

विश्वास, संवाद और संस्कार से मजबूत होते हैं रिश्ते

राजाजीनगर।

हैप्पी कपल खुशियां डबल कार्यशाला में साध्वी संयमलता जी ने कहा कि विश्वास आपसी रिश्तों की डोर है, जो दांपत्य जीवन को खुशहाल और परिवार को एकजुट बनाए रखता है। सहनशीलता से हम दूसरों की भावनाओं को समझ पाते हैं और मधुर वाणी से जीवन में सुख-शांति आती है।

साध्वीश्री मार्दवश्री जी ने कहा कि तकनीकी व एआई युग में संवाद की कमी के कारण रिश्ते कमजोर हो रहे हैं। बच्चों में बचपन से संस्कार और सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास जरूरी है। साध्वी मनीषाप्रभा जी ने कहा कि आपसी सम्मान से जीवन की दिशा सुदृढ़ रहती है।

कार्यक्रम में अभातेमम सदस्य मधु कटारिया ने भी अपने विचार रखे। उपस्थित गणमान्यजनों में तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया, महिला मंडल अध्यक्षा उषा चौधरी, सकल जैन समाज के सदस्य व अनेक श्रावक शामिल रहे। कार्यशाला के सफल संयोजन में रनित कोठारी व जयंतीलाल गांधी का योगदान उल्लेखनीय रहा।

प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 16वें महाप्रयाण दिवस पर विशेष

सरलात्मा, शुद्धात्मा, महात्मा महाप्रज्ञ जी

● मुनि कमलकुमार ●

जैन धर्म के अनुसार यह संसार अनादि काल से चल रहा है। इसमें जन्म और मृत्यु का क्रम भी शाश्वत है। आज तक यह देखने सुनने को नहीं मिला कि अमुक व्यक्ति का जन्म तो हुआ था परन्तु उसकी मृत्यु नहीं हुई। ऐसा ना हुआ और न ही हो सकता है। कुछ व्यक्ति धरा का गौरव बढ़ाने और अपने आत्म कल्याण के लिए ही जन्म लेते हैं। उनमें एक नाम जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के दशमेश आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का भी गौरव के साथ लिया जा सकता है। जिनका जन्म राजस्थान के झुंझनु जिले के अंतर्गत टमकोर नामक गाँव में हुआ। उनकी माता का नाम बालूजी और पिता का नाम तोलाराम जी चौरड़िया था। बचपन में ही पिताश्री का स्वर्गवास हो गया था। आपका पालन पोषण ननिहाल में ही हुआ था। मात्र 10 वर्ष की उम्र में आपका मन विरक्त हो गया था और माता जी के साथ सरदारशहर में तेरापंथ धर्म संघ के अष्टम आचार्य पूज्य कालूगणी के कर कमलों से दीक्षा ग्रहण की।

दीक्षा के पश्चात आपको साधुत्त्व के प्रारम्भिक संस्कार मुनि श्री तुलसी से प्राप्त हुए। आपका हर विषय में तलस्पर्शी अध्ययन देखकर सब आश्चर्यचकित हो जाते। कालूगणी ने मुनि तुलसी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया और वे तेरापंथ के नवमाचार्य कहलाए। परंतु आचार्य श्री तुलसी ने अपने रहते विद्या, विनय, विवेक संपन्न शिष्य को उत्तराधिकारी ही नहीं अपने रहते ही विशाल तेरापंथ धर्मसंघ का आचार्य भी बना दिया। यह तेरापंथ धर्मसंघ के लिए प्रथम ही कहा जा सकता है। आचार्य श्री तुलसी कई बार फरमाते - 'महाप्रज्ञ जी को अतिन्द्रिय ज्ञान हो गया है।' आपका मारवाड़ी, हिंदी, संस्कृत, प्राकृत का गहरा अध्ययन देखकर बड़े-बड़े विद्वान नतमस्तक हो जाते। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी हर विषय के विद्वान और धारा प्रवाह लेखक व वक्ता थे, जिन्हें सुनकर अच्छे-अच्छे दार्शनिक वैज्ञानिक लोग उनके दास बन जाते।

भारत के राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम, प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसी दिग्गज हस्तियाँ उनके साहित्य से प्रभावित थी। जीवन के दसवें दशक में भी वे लेखन, प्रवचन, आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि समस्त कार्यों को युवकों की तरह तत्परता से करते रहे। देवलोक वाले दिन भी प्रातः काल प्रवचन दिराया, आचार्य श्री तुलसी की जन्म शताब्दी की पूरी रूपरेखा बनाई, आगंतुकों को सेवा करवाई।

सदा की भांति आहार कर विश्राम किया। विश्राम के बाद उठते ही बैचेनी सी महसूस हुई और आपने संतों से कहा - महाश्रमण को बुआलो। महाश्रमणजी समणियों को अध्ययन कर रहा थे, ज्योंही संतों ने निवेदन किया गुरुदेव याद फरमा रहे हैं, युवाचार्य श्री तत्परता से श्रीचरणों में पहुँचे। सबके देखते-देखते दोपहर में आप देवलोक पधार गए। आपका जीवन जितना सरल था, मृत्यु भी उतनी ही सरलता से आई। दवाई-डॉक्टर की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। ऐसे सरलात्मा, शुद्धात्मा, महात्मा महाप्रज्ञ जी के पुण्य दिवस पर शत-शत नमन।

महाप्रज्ञ हमारे

● साध्वी उज्ज्वलरेखा ●

महाप्रज्ञ हमारे, नयन सितारे, बालूनंद दुलारे।
महाप्रज्ञ हमारे।।

1. भिक्षु तुलसी के भाष्यकार, आगम सम्पादन की सरिता।
ऊंचाई शासन को अभिनव, संबोधि सचमुच ही गीता।
कवि लेखक व्याख्याता वक्ता, प्रवचन बदले जीवन धारा।
अतिशय ज्ञानी का क्या कहना, अवद्युत अहिंसा का प्यारा।

2. हे सिद्ध पुरुष परमानन्द, अन्तर्दृष्टि सुखमय सृष्टि।
ऊर्जा के अभिनव स्रोत सदा, दी मानवता को नूतन दृष्टि।
सब धर्म गुरु के सम आसन, से खिलती सतरंगी महफिल।
अणुव्रत प्रेक्षा के दीप जले, पथ भूले राही की मंजिल।

3. अमृत बांटा विषपान किया, बनके तुम सच्चे शिवशंकर।
अंधियारी रजनी में चंदा, गण गगणांगन के दिवाकर।
प्रज्ञा का स्रोत बहे अविरल, प्रभु अखिल विश्व के अखिलेश्वर।
भारत सपूत हो शान्तिदूत, मैत्री करुणा के गंगाधर।

4. जन-जन की प्रज्ञा जाग उठे, प्रज्ञोत्सव के क्षण ये उजले।
महाश्रमण चरण में खुशहाली, भक्ति रस के सरगम निकले।
आस्था की रंगोली रचकर, यादों के वंदनवार सजे।
श्रद्धांजलियां अर्पित करते, सबके अन्तरमन तार बजे।

तर्ज़ - मेरे देश की धरती

विश्व नवकार महामंत्र दिवस पर हुआ देशभर में श्रद्धामय जप अनुष्ठान

टी.दासरहल्ली

जीतो निर्देशित नवकर महामंत्र दिवस के उपलक्ष में स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में नवकार जाप का समायोजन किया गया। स्थानीय और निकटवर्ती क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने एकजुट होकर नवकार मंत्र का जाप किया और आत्मिक शांति, साधना एवं विश्व के कल्याण की प्रार्थना की।

राजाराजेश्वरी नगर

विश्व शांति एवं कल्याण के लिए विश्व नवकार महामंत्र दिवस का आयोजन राजाराजेश्वरी नगर के तेरापंथ भवन में किया गया। 325 से अधिक लोगों ने इस जप अनुष्ठान में भाग लिया, श्वेत व लाल रंग की छटा से पूरा भवन निखर रहा था। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र के समवेत स्वर में जप से पूरा वातावरण नवकारमय हो गया। तत्पश्चात सभी ने दिल्ली के विज्ञान भवन से 'विश्व नवकार महामंत्र दिवस' कार्यक्रम में शामिल हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का देश के नाम संबोधन लाइव देखा व सुना। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राकेश छाजेड़ के कुशल निर्देशन में संयोजिका सरोज आर बैद ने व्यवस्थित रूप से कार्यक्रम संपादित किया। मंच संचालन मंत्री गुलाब बाँठिया द्वारा किया गया। सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं राजाराजेश्वरी नगर के समग्र जैन समाज की उपस्थिति में मंगलमय वातावरण में कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

रैलमगरा (राजसमन्द)

सकल ओसवाल समाज रेलमगरा द्वारा स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में विश्व नवकार मंत्र दिवस के अवसर पर सामूहिक रूप से नवकार मंत्र जाप का आयोजन किया गया जिसमें सकल जैन संघ से सैंकड़ों व्यक्तियों की सहभागिता रही। आयोजन को सफल बनाने में सकल जैन संघ के सभी पदाधिकारियों एवं श्रावक समाज की सहभागिता रही।

भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस एवं स्वागत कार्यक्रम

समदड़ी।

साध्वी अणिमाश्री जी ठाणा-5 का दिल्ली चातुर्मास के पश्चात जयपुर, जोधपुर होते हुए भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस के पावन अवसर पर समदड़ी में पादार्पण हुआ। सम्पूर्ण जैन समाज के सैकड़ों व्यक्ति भव्य जुलूस के साथ साध्वी वृंद के साथ पैदल चले। समदड़ी ग्राम में अपार उत्साह दृष्टिगोचर हो रहा था। समदड़ी की साध्वी कर्णिकाश्रीजी 27 वर्ष के बाद एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी दीक्षा के बाद पहली बार जन्म भूमि में आई हैं। कर्नाटक, मुम्बई, सूरत, अहमदाबाद से भी आकर समदड़ी प्रवासियों ने साध्वीवृन्द का स्वागत किया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा- पूज्य प्रवर के निर्देशानुसार हम बालोतरा की ओर विहाररत हैं। पूज्य प्रवर की आज्ञा से आज हमारा एक माह के प्रवास हेतु समदड़ी पर्दापण हुआ है। आज भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस है। आज का दिन तेरापंथ धर्मसंघ के शिलान्यास का ऐतिहासिक दिन है। आज के दिन आचार्य भिक्षु ने धर्म क्रांति का शंखनाद किया। वह शंखनाद तेरापंथ का तोरण बन गया। भिक्षु शासन में हम सबका अभ्युदय होता रहे यही मंगलकामना है।

साध्वीश्री आगे ने कहा कि आज हम साध्वी कर्णिकाश्रीजी एवं साध्वी मैत्रीप्रभाजी की जन्मभूमि में आए हैं। इनकी संसारपक्षीया माताजी एवं ढेलड़िया परिवार हर्षित-पुलकित है। समदड़ी के अनेक रत्न संघ की शान बढ़ा रहे हैं, और भी आत्माओं के भीतर वैराग्य का अंकुर प्रस्फुटित हो ऐसा काम्य है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा मेरी जन्मभूमि, कर्मभूमि एवं दीक्षाभूमि समदड़ी में आते ही अतीत की सुखद स्मृतियां मन को प्रसन्नता प्रदान कर रही है। मैं साध्वीश्री एवं सभी साध्वियों का स्वागत कर रही हूं।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ जी ने मेरी जन्मभूमि में मुझे दूसरा जन्म प्रदान किया। यह मेरा सौभाग्य था। दीक्षा के बाद मुझे साध्वी अणिमाश्रीजी के हाथों में सौंपा, यह मेरा परम सौभाग्य था। साध्वीश्री ने मेरे जीवन का निर्माण किया है। मुझे विकास के सोपानों पर आरोहण करवाया है। मेरी जीवन निर्मात्री साध्वीश्री एवं साध्वीवृन्द का तहेदिल से स्वागत करती हूं।

साध्वी डॉ. सुधाप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु के साहस, सत्संकल्प, सकारात्मक सोच एवं समता ने धर्मक्रांति को नया रूप दिया। साध्वी समत्वयशा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

सभाध्यक्ष अरूण अंबानी, बालोतरा सभाध्यक्ष महेन्द्र मुथा, जोधपुर सभाध्यक्ष सुरेश जीरावला, उपासक धनराज छाजेड, महावीर ढेलडिया, अंकित ढेलडिया, दिशांत ढेलडिया, नितिशा ढेलडिया ने अपने विचार रखें। ढेलडिया परिवार की बहनों ने गीत का संगान किया। बालोतरा महिला मंडल ने मंगल संगान किया। संचालन मंजू ढेलडिया ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
21 अप्रैल - 27 अप्रैल, 2025

फिजिकल मिशन एंपावरमेंट द्वितीय कार्यशाला का हुआ आयोजन

राजाजीनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा तेरापंथ टास्क फोर्स (TTF) के Har City TTF के अंतर्गत फिजिकल मिशन एंपावरमेंट द्वितीय कार्यशाला का आयोजन शांतिलाल जी, लादुलाल पितलिया के चिकपेट स्थित प्रतिष्ठान भेरू गार्मेंट्स में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया ने भैरू गार्मेंट्स में फिजिकल मिशन एंपावरमेंट कार्यशाला करने की स्वीकृति प्रदान करने के लिए पितलिया परिवार का धन्यवाद व्यक्त करते हुए वहां पर उपस्थित सभी का स्वागत किया। शाखा प्रभारी दिनेश मरोठी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कहीं अगर कोई दुर्घटना घट जाए और आप वहां पर उपलब्ध हो और आपको जानकारी हो तो मेडिकल इमर्जेंसी में आप किसी की जिंदगी बचाने का माध्यम बन सकते हैं। उसके पश्चात तेरापंथ टास्क फोर्स ट्रेनर जय चौरड़िया ने उपस्थित सभी को मेडिकल इमरजेंसी में या दैनिक जीवन में होने वाली आपातकालीन घटनाएं जैसे की शरीर में चोट लगने पर, ब्लीडिंग होने, फैक्चर होने आदि परिस्थितियों में मरीज को तुरंत राहत देने के उपायों के बारे में जानकारी दी। पूरी जानकारी डेमो के माध्यम से सभी को बहुत ही सरल एवं प्रभावशाली तरीके से समझाई गई। सभी को हर 3-4 महीने के अंतराल में रक्तदान करने की प्रेरणा दी। जिससे हमारे शरीर में नए रक्त का प्रवाह हो सके। इस कार्यशाला में प्रतिष्ठान के स्टाफ, मैनेजमेंट सहित लगभग 235 जनों की उपस्थिति रही। परिषद परिवार की ओर से शांतिलाल पितलिया एवं परिवार का सम्मान किया गया। पितलिया परिवार की ओर से परिषद एवं जयकुमार चोरड़िया का सम्मान करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर अभातेयुप सीपीएस के राष्ट्रीय प्रभारी एवं तेयुप राजाजीनगर के शाखा प्रभारी दिनेश मरोठी, तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया, तेयुप मंत्री जयंतीलाल गाँधी एवं कोषाध्यक्ष रवि चौधरी की उपस्थिति रही।

मासखमण तप अभिनंदन समारोह

गंगाशहर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, गंगाशहर के तत्वावधान में बोथरा भवन, गंगाशहर में मासखमण तप अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। यह आयोजन आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती, उग्र विहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर सुरेंद्र कुमार भूरा की 31 दिवसीय तपस्या पूर्ण हुई। तप की अनुमोदना करते हुए मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि तपस्या केवल उच्च मनोबल से ही संभव है। यह आत्मा को मोक्ष की ओर अग्रसर करती है और पापकर्मों को क्षीण करती है। तपस्या न तो किसी से प्रतिस्पर्धा का विषय है, न ही यह किसी की देखा-देखी की जा सकती है। मुनि श्री ने आगे कहा कि सुरेंद्र भूरा का परिवार समय-समय पर तपस्या में लीन रहता है। वे साध्वी ईला कुमारी जी के सहोदर भाई हैं। मुनि श्री ने बताया कि सुरेंद्र ने पूर्व में संकल्प लिया था कि इस प्रवास काल में एक बड़ी तपस्या करूँगा, जिसे आज उन्होंने पूर्ण कर धर्मसंघ की गरिमा और गौरव को बढ़ाया है। साथ ही उन्होंने आत्मकल्याण के मार्ग में एक महत्वपूर्ण कदम भी बढ़ाया है। मुनिश्री ने तपस्वी को वैराग्य भावना को प्रबल करते हुए दीक्षा लेने का संकल्प करने का सुझाव भी दिया।

इससे पूर्व, हनुमान जयंती के अवसर पर मुनि श्री ने बजरंगबली नाम की महिमा का वर्णन किया और सती अंजनी माता के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। साथ ही मुनि गणेश कुमार जी द्वारा रचित 'पवनपुत्र चालीसा' का संगान भी किया । मुनि श्री ने सुरेंद्र भूरा की तपस्या के उपलक्ष्य में गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम के दौरान तेरापंथ सभा की ओर से साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी का संदेश सभा के कार्यकारिणी सदस्य हनुमानमल सेठिया द्वारा वाचन किया गया। सभा की ओर से माणकचंद सामसुखा, कमल भंसाली एवं हनुमान सेठिया ने तपस्वी सुरेंद्र भूरा को प्रशस्ति पत्र भेंट कर उनकी तपस्या की अनुमोदना की।

टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हुए प्रोफेशनल्स रूबरू

भीलवाड़ा।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) के राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत माण्डोत अपनी संगठन यात्रा के तहत भीलवाड़ा शाखा पहुंचे, जहां उन्होंने स्थानीय प्रोफेशनल्स से संवाद स्थापित कर संगठन की शक्ति, उद्देश्य एवं महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस विशेष अवसर पर माण्डोत ने वर्तमान में चल रहे TPF के प्रोजेक्ट्स की जानकारी दी और संगठन के विभिन्न स्तरों पर हो रहे नवाचारों से अवगत कराया।

माण्डोत ने कहा कि "तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम केवल एक संगठन नहीं, बल्कि विचारों, सेवा और प्रोफेशनल विकास का संगम है। इसका उद्देश्य समाज में प्रोफेशनल्स की भूमिका को सशक्त बनाना, नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना और सेवा कार्यों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना है।"

इस महत्वपूर्ण संगठन यात्रा में राष्ट्रीय सहमंत्री राकेश सुतरिया, सेंट्रल जोन अध्यक्ष लक्ष्मी लाल गांधी, NEC सदस्यगण गौतम दुग्गर, अजय नौलखा, भीलवाड़ा शाखा अध्यक्ष प्रशांत सिंघवी, मंत्री वरुण पितलिया, कोषाध्यक्ष सुमित दक, फाउंडर मेंबर्स नवीन बागरेचा, विनोद पितलिया एवं अंकुर बोरडिया विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में शाखा के पूर्व अध्यक्ष भेरूलाल बाफना, गौतम रांका, करण सिंह सिंघवी सहित कार्यकारिणी सदस्य, तेयुप मंत्री महावीर खाब्या, अणुव्रत समिति अध्यक्ष अभिषेक कोठारी सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण की गरिमामयी उपस्थिति रही।

यह संगठन यात्रा TPF के उद्देश्यों को और अधिक सशक्त बनाने, प्रोफेशनल्स के मध्य सशक्त संवाद एवं समन्वय स्थापित करने और संगठन को नई ऊर्जा प्रदान करने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रही। कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों ने अपने विचार साझा किए और TPF के आगामी प्रोजेक्ट्स में सक्रिय सहभागिता का संकल्प लिया।

पृष्ठ 16 का शेष

नमस्कार महामंत्र में...

इन पांच पदों में अनन्त जीव विराजमान हैं। तीर्थंकर कम से कम बीस और अधिकतम 170 एक साथ इस दुनिया में हो सकते हैं। सिद्ध भगवान तो अनन्त हैं और अनन्त हो जायेंगे। केवलज्ञानी भी होते हैं वे कम से कम 2 करोड़ और उत्कृष्ट नौ करोड़ मिलते है। आचार्य, उपाध्याय और साधु भी दुनिया में हमेशा रहते हैं। साधु तो जघन्य दो हजार करोड़ कर उत्कृष्ट नौ हजार करोड़ हो सकते हैं। पूज्यवर ने पंच परमेष्ठी की स्तुति में 'श्रद्धा विनय समेत' गीत का संगान करवाया।

पूज्यवर ने आगे कहा - नवकार का अपना महत्व है। आज 9 अप्रैल है। जीतो संस्था द्वारा आज विश्व नवकार महामंत्र दिवस के रूप में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया है। पूज्यवर ने नवकार महामंत्र का जाप करवाकर जीतो के कार्यक्रम में सहभागिता करवायी।

आचार्यश्री के स्वागत में साध्वी सिद्धांतश्रीजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए गीत का संगान किया। शशिकांतभाई मोदी, रघुवंशी देसी लोहाना महाजनवाडी के प्रमुख हरीभाई आचार्य ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। भाभर नगरपालिका प्रमुख वलूभाई राठौड़, गुजरात भाजपा की प्रदेशी मंत्री नौकाबेन प्रजापति ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। प्रतीक परिख व नव्या परिख ने अपनी प्रस्तुति दी। वाव-पथक के संयोजक दिलीप सिंघवी, संरक्षक प्रवीणभाई मेहता ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। भाभर तेरापंथ महिला मण्डल व वाव पथक महिला मण्डल ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

नवकार महामंत्र सिर्फ एक...

प्रधानमंत्री ने देश भर में विभिन्न स्थानों पर प्राप्त हो रहे चारित्रात्माओं के आशीर्वाद के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने इस वैश्विक आयोजन के लिए पूरे जैन समुदाय को अपना सम्मान व्यक्त किया। इस ऐतिहासिक आयोजन के लिए जीतो को उनके प्रयासों के लिए बधाई दी और गुजरात के गृह मंत्री हर्ष संघवी, जीतो अपेक्स अध्यक्ष पृथ्वीराज कोठारी, अध्यक्ष विजय भंडारी, अन्य पदाधिकारियों एवं गणमान्य लोगों की उपस्थिति को स्वीकार करते हुए इस उल्लेखनीय आयोजन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं।

पृष्ठ 15 का शेष

अनेकान्तवाद के सिद्धान्त..

साध्वीवर्याश्री संबुद्धयशाजी ने कहा कि आज का दिन भगवान महावीर की स्तुति, स्मृति करने का और उनके सिद्धान्तों, दर्शन और विचारों को पढ़ने, समझने का और जीवन में आत्मसात् करने का दिन है। भगवान ने विश्व को समझने के लिए अनेकान्तवाद का सिद्धान्त दिया। आज के पावन अवसर पर पूज्यवर ने महत्ती कृपा कराते हुए मुमुक्षु मनोज संकलेचा को 3 सितम्बर 2025 को प्रेक्षा विश्व भारती में आयोज्य दीक्षा समारोह में मुनि दीक्षा देने की घोषणा करवायी। मुमुक्षु अर्हम, मुमुक्षु जिगर और मुमुक्षु जहान को साधु प्रतिक्रमण सीखने की आज्ञा प्रदान करवायी।

भाभर के बालक-बालिकाओं ने अपनी प्रस्तुति दी। वाव-पथक भाभर की महिलाओं ने गीत का संगान किया। भाभर मूर्तिपूजक संप्रदाय के ट्रस्टी सेवंती भाई, रजनीभाई, भीखाभाई आचार्य ने अपनी भावना व्यक्त की। स्थानीय विधायक स्वरूप सरदार ठाकुर ने भी अपने विचार व्यक्त कर आचार्यश्री से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। निराली मोदी ने गीत का संगान किया। मोदी परिवार के युवकों ने भी अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अनेकान्तवाद के सिद्धान्त का हो व्यवहार में उपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

महावीर के प्रतिनिधि ने सुनाई महावीर की गौरव गाथा

भाभर।
10 अप्रैल, 2025

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, वर्तमान अवसर्पिणी काल के भरत क्षेत्र के अन्तिम चरम तीर्थंकर भगवान महावीर का पावन जन्म कल्याणक दिवस। तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवान महावीर को सादर भावांजलि समर्पित करते हुए फरमाया कि भगवान महावीर के लिए लोकोत्तम शब्द का प्रयोग किया गया है। इस दुनिया में उत्तम पुरुष भी मिलते हैं तो मध्यम और निम्न स्तर के पुरुष भी उपलब्ध हो सकते हैं। श्रमण ज्ञातपुत्र को लोकोत्तम कहा गया है। दुनिया में और भी लोकोत्तम पुरूष हुए हैं। लोकोत्तम होना कोई सामान्य बात नहीं है। अरिहन्त-सिद्ध लोकोत्तम होते हैं, साधु और केवली प्रज्ञप्त धर्म भी लोकोत्तम होते हैं।

श्रमण ज्ञातपुत्र इसलिए लोकोत्तम हैं कि उनमें धर्म था। केवली प्रज्ञप्त धर्म उनके जीवन में था। केवली प्रज्ञप्त धर्म मूल में लोकोत्तम है, वो जिसमें होता है, वो व्यक्ति लोकोत्तम है। इसी कारण अरिहन्त, सिद्ध और साधु, जो केवली प्रज्ञप्त धर्म की साधना करने वाले हैं, वे लोकोत्तम हैं। भगवान महावीर का जीवन हमें आगम वांग्मय में भी उपलब्ध होता है। आयारो आगम के नवमें अध्ययन में भगवान महावीर के जीवन की अवगति बताई गई है। उनके जीवन और उपदेश का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।

भगवान महावीर का जीवन काल लंबा नहीं था। 30 वर्ष गृहस्थ, 12 वर्ष 6 महीने साधना काल व लगभग 30 वर्ष कैवल्य प्राप्ति का रहा, पर कम जीवनकाल वाले भी महापुरूष हो सकते हैं। जीवन कैसे बीता, कैसे जी रहे हैं, वह महत्वपूर्ण है। वे महाप्रशस्तजीवी थे। आज उनकी जन्मतिथि है, यह तिथि भी अपने आप में धन्य हो गई कि इस दिन महान व्यक्ति ने जन्म लिया था। अवतरण तो सवा नौ महीने पहले हो गया था, आज का दिन तो प्रागट्य का दिन है। जन्म होना तो एक सामान्य घटना है। जन्म के बाद प्राणी करता क्या है, वह महत्वपूर्ण बात है। गर्भस्थ जीव को भी अच्छे संस्कार दिये जा सकते हैं। जैन दर्शन के अनेक सिद्धान्तों में आत्मवाद, लोकवाद, कर्मवाद, पुनर्जन्मवाद, अनेकान्तवाद आदि है।

अनेकान्तवाद वैचारिक अहिंसा का सिद्धान्त हो सकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी तो आगम सम्पादन के धुरन्धर व्यक्तित्व थे। आगम सम्पादन में संस्कृत छाया और हिन्दी अनुवाद में तादात्म्य हो। अनेकान्त के द्वारा समस्या का समाधान हो सकता है। दोनों ओर की बात सुनकर समाधान हो सकता है। दोनों की बात सही हो जरूरी नहीं है, मतभेद भी हो सकता है। सबका विचार अलग-अलग हो सकता है पर झगड़ा न हो, तर्क किया जा सकता है। अनेकान्त के सिद्धान्त को व्यवहार में भी उपयोग लाएं तो शांति की बात हो सकती है।

कर्मवाद भी जैन धर्म का मुख्य सिद्धान्त है। 'जैसी करणी वैसी भरणी' यह कर्मवाद की मूल बात है। कर्मवाद का विस्तृत रूप आगमों में मिल सकता है। महापुरूष जो उच्च कोटि के होते हैं, वो दुनिया के लिए उपयोगी होते हैं। उनका सिद्धान्त सीमातीत हो सकता है। महावीर के नाम में तो हम सब एक हो सकते हैं। सबके साथ मैत्री की भावना बनी रहे, हम आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ते रहें।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानती हूँ कि इस युग में मुझे भगवान महावीर के दर्शन को पढ़ने का अवसर मिला। उनके दर्शन को समझने का और उसे जीवन में उतारने का अवसर मिला। भगवान महावीर के जीवन को हम तीन भागों में बांट सकते हैं - गृहस्थ का जीवन, साधना का जीवन और उनके कैवल्य का जीवन। जीवन के प्रारम्भ से ही भगवान अप्रमाद की साधना में लग गये थे।

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने कहा कि भगवान महावीर ने स्वयं जागृत जीवन जीया और जन-जन को जागृत करने का प्रयास किया। निर्वाणवादियों, मुनियों, ऋषियों और तपस्वियों में महावीर श्रेष्ठ हैं। पूज्यवर आचार्यश्री महाश्रमणजी भी एक युगीन सोच के धनी है। महावीर के सिर्फ गुणगान ही न हो, हम महावीर के अवदानों को भी समझें। महावीर को मानने का ही नहीं, जानने का, आचरण में लाने का प्रयास करें। (शेष पेज 14 पर)

दुर्लभ मनुष्य जीवन का सार निकालने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

इन्दरवा नवा ।
8 अप्रैल , 2025

आत्म साधना में निरन्तर अग्रसर आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 13 किमी का विहार कर इन्दरवा नवा प्राथमिक शाला में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए परम पूज्य ने फरमाया कि एक व्यक्ति कमाता भी है और खर्च भी कर देता है। खर्चा ज्यादा कर दिया तो मूल भी गंवा दिया। दूसरे ने जितना कमाया उतना खर्च कर दिया, मूल सुरक्षित रखा। तीसरे ने कमाया ज्यादा और खर्चा कम किया, उसने बहुत ज्यादा धन इकट्ठा कर लिया।

धर्म की दृष्टि से हम कल्पना करें कि मनुष्य जन्म मूल पूंजी है, जो पाप कर्म करते हैं, वे मनुष्य गति से भी नीचे चले गये। मानव जीवन व्यर्थ व्यसनों में गंवा दिया। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो धर्म-ध्यान भी ज्यादा नहीं करते और पाप भी ज्यादा नहीं करते वे मृत्यु के पश्चात् मनुष्य के रूप में वापिस जन्म ले लेते हैं। मूल पूंजी मनुष्य जन्म की सुरक्षित रह गई। न कमाया, न गंवाया। कुछ लोग धर्म-ध्यान करने वाले, तपस्या, संयम की आराधना करने वाले श्रावक धर्म को पालने वाले या बालतपस्वी होते हैं, वे मनुष्य जन्म के बाद देव गति में जाते हैं। वे मूल पूंजी को बढ़ाकर आगे बढ़ते हैं।

मानव जीवन हमें प्राप्त है, इसका हमें लाभ उठाना चाहिए। धर्म की आराधना करनी चाहिए। अहिंसा-संयम और तप की साधना करनी चाहिए। मानव जीवन में साधु बनना तो बहुत ऊंची बात है। गृहस्थ में भी धर्म की कमाई कर सकते हैं। कुछ लोग तो नशे या बुरी आदतों में चले जाते हैं, वे तो धर्म-अध्यात्म की कमाई करना ही नहीं जानते वे तो संस्कार विहीन होते हैं। कुछ धर्म नहीं करते तो व्यसनों में भी नहीं जाते। कुछ गृहस्थ धार्मिक-आध्यात्मिक साधना करते हैं। साधु संतों की सेवा-उपासना करते हैं, उनके संपर्क में रहते हैं। संयम की साधना करने वाले सम्यक्त्वी होते हैं। जैन हो या अजैन, अच्छी साधना कर कोई भी देवगति में जा सकते हैं। मोक्ष को भी प्राप्त कर सकते हैं। मोक्ष का द्वार तो मनुष्य गति है। मनुष्य गति से ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। जब तक साधुत्व नहीं आता, मोक्ष नहीं मिल सकता। गृहस्थ वेष में भी साधुपन, मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। साधुपन तो भावना में आना आवश्यक है, भीतर के भाव विशुद्ध होने चाहिए। व्यवहार में वेष पहचान है, निश्चय की बात अलग है। हम त्याग-साधना कर मनुष्य जन्म का लाभ उठाने का प्रयास करें।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच भूपतभाई राठौड़, प्राथमिकशाला के प्रिंसिपल प्रकाशभाई परमार व आर.एम.एस.ए. हाईस्कूल से हर्षदभाई सोलंकी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 अप्रैल - 27 अप्रैल, 2025

नमस्कार महामंत्र में किया गया है पांच प्रकार की विशिष्ट आत्माओं को नमन : आचार्यश्री महाश्रमण

विश्व नवकार महामंत्र दिवस पर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में हुआ नवकार जाप

भाभर।
9 अप्रैल, 2025

जीतो संस्था द्वारा भारत सहित पूरे विश्व में 9 अप्रैल को विश्व नवकार महामंत्र दिवस के रूप में मनाया गया। जैन धर्म के चारों सम्प्रदायों के आचार्यों ने भी इस जप अनुष्ठान हेतु स्वीकृति प्रदान करवाई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में नई दिल्ली में मुख्य कार्यक्रम आयोजित हुआ।

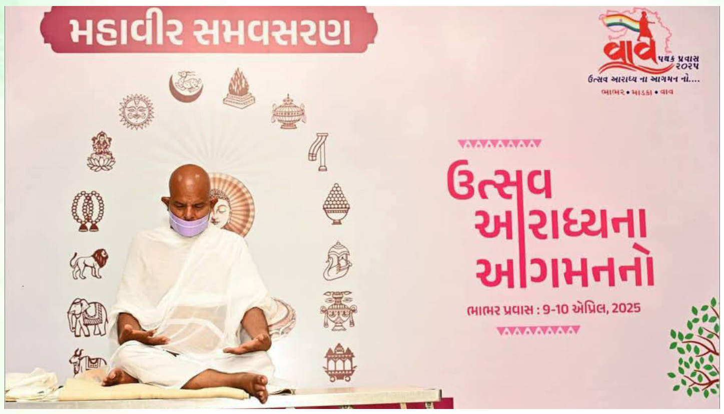

जिन शासन के सजग प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ लगभग 12 किमी का विहार कर दो दिवसीय प्रवास हेतु भाभर पधारे। जिन वाणी की अमृत वर्षा कराते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि नमस्कार महामंत्र में पांच प्रकार की विशिष्ट आत्माओं को नमन किया गया है, जिनमें अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सर्व साधु सम्मिलित हैं।

परम पुनीत अर्हत् इस संसार की वे आत्माएं हैं जो चार घाती कर्मों का नाश कर तीर्थंकरत्व को उपलब्ध हो चुकी हैं। वर्तमान अवसर्पिणी काल में इस भरत क्षेत्र में 24 तीर्थंकर हो चुके हैं जो अर्हत् थे, फिर सिद्धत्व को प्राप्त हो गये।

भौतिक जगत का उत्कृष्ट व्यक्ति एक चक्रवर्ती होता है और अध्यात्म जगत में उत्कृष्ट व्यक्ति तीर्थंकर होते हैं। चक्रवर्ती षट् खण्डाधिपति होते हैं। कोई-कोई मनुष्य चक्रवर्ती बन जाते हैं और उसी जीवनकाल में तीर्थंकरत्व को भी प्राप्त हो जाते हैं। सिद्ध भगवान आठों कर्मों से मुक्त आत्माएं हैं, मोक्ष अवस्था को प्राप्त हो चुके हैं। जिनका सब प्रयोजन मानो सिद्ध हो गया है। जीव को अमूर्त कहा जाता है। उस अमूर्तत्व का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण सिद्ध भगवान हैं जो पूर्णतया अमूर्त होते हैं। संसारी जीव अमूर्त हैं पर उनके कर्म लगे हुए हैं। कर्म अपने आप में मूर्त है और संसारी जीव कर्मों से युक्त है। आचार्य पांच पदों में मध्यवर्ती होते हैं, वे तीर्थंकर के प्रतिनिधि कहलाते हैं। आचार का पालन करना-कराना और संघ का नेतृत्व करना उनकी जिम्मेवारी होती है। वे तीर्थंकर की वाणी के प्रवक्ता हो सकते हैं। उपाध्याय ज्ञानमूर्ति, आगमों के अध्ययन और अध्यापन में निरत रहने वाले, आगम मनीषी होते हैं। साधना करने वाले, महाव्रतों की आराधना करने वाले, शुद्ध साधु होते हैं।

(शेष पेज 14 पर)

नवकार महामंत्र सिर्फ एक मंत्र नहीं है, हमारी आस्था का मूल है : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

विज्ञान भवन, नई दिल्ली।
9 अप्रैल, 2025

जैन इंटरनेशनल ट्रेड आर्गेनाईजेशन द्वारा निर्देशित विश्व नवकार महामंत्र दिवस कार्यक्रम विश्व भर में विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया। इस आयोजन में सकल जैन समाज ने एकजुटता के साथ जुड़कर नमस्कार महामंत्र के भाव पूर्ण अनुष्ठान के साथ विश्व कल्याण की कामना की।

नई दिल्ली के विज्ञान भवन में विश्व नवकार महामंत्र दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि नवकार मंत्र स्थिरता, समभाव और आंतरिक प्रकाश की सामंजस्यपूर्ण लय का प्रतीक है। प्रधानमंत्री ने बताया कि गुजरात में जैन संस्कृति का गहरा प्रभाव है और उन्हें बचपन से जैन आचार्यों के सान्निध्य का सौभाग्य मिला। उन्होंने कहा कि जैन धर्म आत्म-विजय की प्रेरणा देता है और नवकार मंत्र व्यक्ति को भीतर से शुद्ध करता है। उन्होंने कहा- 'नवकार मंत्र केवल एक मंत्र नहीं है, हमारी आस्था का केंद्र है।'

प्रधानमंत्री ने भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण महोत्सव और विदेशों से तीर्थंकर मूर्तियों की वापसी की चर्चा करते हुए बताया कि हाल के वर्षों में 20 से अधिक प्राचीन मूर्तियाँ भारत लाई गई हैं। उन्होंने नई संसद में जैन संस्कृति के प्रभाव की ओर भी संकेत किया।

प्रधानमंत्री ने आगे कहा - जैन धर्म का साहित्य भारत के बौद्धिक वैभव की रीढ़ रहा है। इस ज्ञान को संजोना हमारा कर्तव्य है। प्राकृत और पाली को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने के सरकार के फैसले की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि इससे जैन साहित्य पर और अधिक शोध हो सकेगा। उन्होंने कहा कि भाषा को संरक्षित करने से ज्ञान का अस्तित्व बना रहता है और भाषा का विस्तार करने से ज्ञान का विकास होता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि जैन धर्म वैज्ञानिक और संवेदनशील दोनों है। उन्होंने कहा कि जैन परंपरा का प्रतीक - ※परस्परोपग्रहो जीवानाम्※ - सभी जीवों की परस्पर निर्भरता पर जोर देता है। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण, आपसी सद्भाव और शांति के गहन संदेश के रूप में जैन धर्म की अहिंसा के प्रति प्रतिबद्धता, चाहे वह सबसे सूक्ष्म स्तर पर ही क्यों न हो, को रेखांकित किया। उन्होंने दुनिया को अनेकांतवाद के दर्शन को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

जलवायु परिवर्तन के ज्वलंत मुद्दे को संबोधित करते हुए उन्होंने व्यवस्थित जीवन शैली को समाधान के रूप में पहचाना और भारत द्वारा 'मिशन लाइफ़' की शुरुआत का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि जैन समुदाय सदियों से सादगी, संयम और स्थिरता के सिद्धांतों पर जी रहा है। अपरिग्रह के सिद्धांत का उल्लेख करते हुए उन्होंने इन मूल्यों को व्यापक रूप से विस्तारित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सभी से, चाहे वे किसी भी स्थान पर हों, मिशन लाइफ़ के ध्वजवाहक बनने का आग्रह किया।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि विश्व नवकार मंत्र दिवस वैश्विक स्तर पर सुख, शांति और समृद्धि को निरंतर बढ़ाएगा। उन्होंने इस आयोजन के लिए चारों संप्रदायों के एक साथ आने पर संतोष व्यक्त करते हुए इसे एकता का प्रतीक बताते हुए, पूरे देश में एकता के संदेश को फैलाने के महत्व पर बल दिया।

(शेष पेज 14 पर)

नौ संकल्पों का आह्वान

प्रधानमंत्री ने सामूहिक नवकार जाप के पश्चात सभी नागरिकों से नौ संकल्प लेने का आह्वान किया:

1. पानी बचाने का संकल्प
2. एक पेड़ माँ के नाम
3. स्वच्छता का मिशन
4. वोकल फॉर लोकल
5. देश दर्शन
6. प्राकृतिक खेती को अपनाना
7. हेल्थी लाइफस्टाइल को अपनाना
8. योग और खेल को जीवन में लाना
9. गरीबों की सहायता का संकल्प

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।